राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक–पुरातत्त्वाचार्य, जिनविजय मुनि

[सम्मान्य संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मंदिर, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ४३

चारण ब्रह्मदासजी दादूपंथी विरचित

भगतमाळ

प्रकाशक

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

जोधपुर (राजस्थान)

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक–पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[सम्मान्य संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मंदिर, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ४३

चारण ब्रह्मदासजी दादूपंथी विरचित

भगतमाळ

प्रकाशक

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

जोधपुर (राजस्थान)

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत: अखिल भारतीय तथा विशेषत: राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी]

सम्मान्य सदस्य

भाण्डारकर प्राच्यविद्यासंशोधनमन्दिर, पूना; गुजरातसाहित्य-सभा, अहमदाबाद;
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोधन प्रतिष्ठान, होशियारपुर; निवृत्त सम्मान्य नियामक–
(आनरेरि डायरेक्टर)—भारतीय विद्याभवन, बम्बई

ग्रन्थाङ्क ४३

चारण ब्रह्मदासजी दादूपंथी विरचित

भगतमाल

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

जोधपुर (राजस्थान)

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चारण ब्रह्मदासजी दादूपंथी विरचित

भगतमाल

सम्पादक

चारण कवि उदयराजजी उज्ज्वल

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१६ | भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८१ | खिस्ताब्द १९५९
प्रथमावृत्ति १००० | मूल्य १.७५

मुद्रक—हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला के कुछ ग्रन्थ

प्रकाशित ग्रन्थ

संस्कृतभाषाग्रन्थ—१. प्रमाणमंजरी—तार्किकचूड़ामणि सर्वदेवाचार्य, मूल्य ६.०० । २. यन्त्रराजरचना–महाराजा सवाई जयसिंह, मूल्य १.७५ । ३. महर्षिकुलवैभवम्–स्व० श्री मधुसूदन ओझा, मूल्य १०.७५ । ४. तर्कसंग्रह–पं० क्षमाकल्याण, मूल्य ३.०० । ५. कारकसम्बन्धोद्योत–पं० रभसनन्दि, मूल्य १.७५ । ६. वृत्तिदीपिका–पं० मौनिकृष्ण मूल्य २.०० । ७. शब्दरत्नप्रदीप, मूल्य २.०० । ८. कृष्णगीति–कविसोमनाथ, मूल्य १.७५ ९. शृङ्गारहारावली-हर्षकवि, मूल्य २.७५ । १०. चक्रपाणिविजयमहाकाव्य-पं० लक्ष्मीधरभट्ट, मूल्य ३.५० । ११. राजविनोद–कवि उदयराज, मूल्य २.२५ । १२. नृत्तसंग्रह, मूल्य १.७५ । १३. नृत्यरत्नकोश, प्रथम भाग–महाराणा कुम्भकर्ण, मूल्य ३.७५ । १४. उक्तिरत्नाकर–पं० साधुसुन्दरगणि, मूल्य ४.७५ । १५ दुर्गा पुष्पांजलि–पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी, मूल्य ४.२५ । १६. कर्णकुतूहल तथा कृष्णलीलामृत–भोलानाथ, मूल्य १.५० । १७. ईश्वरविलास महाकाव्य–श्रीकृष्ण भट्ट, मूल्य ११.५० । १८. पद्यमुक्तावली–कवि कलानिधि श्री कृष्णभट्ट, मूल्य ४.०० । १९. रसदीर्घिका–विद्याराम भट्ट, मूल्य २.०० ।

राजस्थानी और हिन्दी भाषा ग्रन्थ—१. कान्हड़दे प्रबन्ध–कवि पद्मनाभ, मूल्य १२.२५ । २. क्यामखांरासा–कवि जान, मूल्य ४.७५ । ३. लावारासा–गोपालदान, मूल्य ३.७५ । ४. बांकीदासरी ख्यात–महाकवि बांकीदास, मूल्य ५.५० । ५. राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग १, मूल्य २.२५ । ६. जुगल-विलास–कवि पीथल, मूल्य १.७५ । ७. कवीन्द्र-कल्पलता–कवीन्द्राचार्य. मूल्य २.०० । ८. भगतमाळ–चारण ब्रह्मदासजी, मूल्य १.७५ । ९. राजस्थान पुरातत्वान्वेषण मन्दिर के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची, भाग १, मूल्य ७.५० ।

प्रेसों में छप रहे ग्रन्थ

संस्कृत भाषा ग्रन्थ—१. त्रिपुराभारतीलघुस्तव–लघुपंडित । २. शकुनप्रदीप–लावण्यशर्मा । ३. करुणामृतप्रपा–ठक्कुर सोमेश्वर । ४. बालशिक्षा व्याकरण–ठक्कुर संग्रामसिंह ५. पदार्थरत्नमंजूषा–पं० कृष्णमिश्र । ६. काव्यप्रकाशसंकेत–भट्ट सोमेश्वर । ७. वसन्तविलास फागु । ८. नृत्यरत्नकोश भाग २ । ९. नन्दोपाख्यान । १०. वस्तुरत्नकोश । ११. चान्द्रव्याकरण । १२. स्वयंभूछंद–स्वयंभू कवि । १३. प्राकृतानंद–कवि रघुनाथ । १४. मुग्धाववोध आदि औक्तिक संग्रह । १५. कविकौस्तुभ–पं० रघुनाथ मनोहर । १६. दशकण्ठवधम्–पं० दुर्गाप्रसाद । १७. भुवनेश्वरीस्तोत्र सभाष्य–पृथ्वीधराचार्य भा. पद्मनाभ ।

राजस्थानी और हिन्दी भाषा ग्रन्थ—१. मुंहता नैणसीरी ख्यात–मुंहता नैणसी । २. गोरावादल पदमिणी चऊपई–कवि हेमरतन । ५. चंद्रवंशावली–कवि मोतीराम । ६. सुजान संवत–कवि उदयराम । ७. राजस्थानी दूहा संग्रह । ८. वीरवांण–ढाढी बादर । ९. रघुवरजसप्रकाश–किसनाजी आढ़ा । १०. राठोड़ांरी वंशावली । ११. राजस्थानी भाषा-साहित्य ग्रंथ सूचि । १२. राजस्थान पुरातत्वान्वेषण मन्दिर के हस्तलिखित ग्रंथों की सूची, भाग २ ।

इन ग्रंथों के अतिरिक्त अनेकानेक संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, प्राचीन राजस्थानी और हिन्दी भाषा में रचे गये ग्रंथों का संशोधन और सम्पादन किया जा रहा है ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सञ्चालकीय वक्तव्य

भारतीय साहित्यके विकासमें चारण-साहित्यकारोंका विशेष सहयोग रहा है। राजस्थान, गुजरात और मध्यप्रदेशके हजारों ही चारण कवियों और कवयित्रियोंने राजस्थानी भाषामें गद्य-पद्य-मय अनूठी साहित्यिक रचनाएँ प्रस्तुत कर हमारे साहित्यको गौरवान्वित किया है। वीररसकी अभिव्यक्ति करनेमें तो चारण कवि संसारमें अद्वितीय माने ही गये हैं, साथ ही इन कवियोंने शान्त, शृङ्गार और हास्यादि रसोंकी भी अनुपम सृष्टि की है।

ख्यात, वार्ता, हाल, हकीकत, विगत, पीढ़ी, वंसावलि आदि गद्यात्मक रचनाएँ; छोटे-बड़े प्रबन्ध काव्य और गीत, कवित्त, कुंडळिया एवं दूहादि फुटकर रचनाएँ लाखोंकी संख्यामें चारण साहित्यकारों द्वारा रचित प्राप्त होती हैं जिनका एक विशिष्ट संग्रह राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरमें हो चुका है।

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालामें प्रकाशित प्रस्तुत "भगतमाळ" कृति बीठू शाखाके चारण ब्रह्मदासजी नामक दादूपंथी साधुकी है। भगतमाळसे ज्ञात होता है कि ब्रह्मदासजी परम कुशल कवि थे। "वयण सगाई" नामक कठिन अलंकारका निर्वाह और "गीत" जैसे छन्दोंमें काव्य-रचना करना मध्ययुगीन राजस्थानी कवियोंके लिए अनिवार्य हो गया था जिससे प्रकट है कि राजस्थानी काव्य तब चरम उत्कर्षको पहुँच चुका था। वयण-सगाईका काव्यमें आद्यसे इति तक प्रत्येक चरणमें निर्वाह करना और गीत जैसे छंदोंमें काव्य-रचना सामान्य कोटिके कवियोंके लिये संभव नहीं है। ब्रह्मदासजीने "भगतमाळमें" वयण-सगाई अलंकारका छन्दोंके समस्त चरणोंमें निर्वाह किया है और अनेक गीतोंकी रचना भी की है।

"भगतमाळ" काव्य द्वारा कई ऐसे भक्तोंके विषयमें भी जानकारी प्राप्त होती है जिनके लिये अन्यत्र नहीं लिखा गया है। जैसे भक्त त्रिलोकचन्द्र जैन, चारभुजा मेवाड़का देवा पुजारी और भवानीसिंह चौहानके विषयमें अन्य ग्रन्थोंमें सामग्री का अभाव है।

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरके जोधपुरमें नवनिर्मित भवनमें स्थानान्तरित होने पर मारवाड़के सुप्रसिद्ध चारण कवि उदयराजजी उज्ज्वलने स्वसम्पादित भगतमाळकी प्रति प्रस्तुत की तो हमने राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालामें इसको प्रकाशित करनेका निर्णय किया। तदनुसार यह अत्यल्प कालमें ही मुद्रित होकर पाठकोंके पास पहुंच रही है।

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालामें ऐसी उत्कृष्ट प्राचीन कृतियोंके प्रकाशनमें हम सदैव प्रयत्नशील रहेंगे। इति।

अनेकान्त विहार,
अहमदाबाद,
दशहरा पर्व, सन् १९५९ ई०

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक
राजस्थान ओरियण्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट,
जोधपुर।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
१. सञ्चालकीय वक्तव्य	
२. सम्पादकीय प्रस्तावना	
३. भगतमाळ प्रथम	१–१५
४. भगतमाळ द्वितीय	१६–३२
५. भगतमाळ त्रतीय	३३–३७
६. भगतमाळ चतुर्थ	३८–५०
७. भगतमाळ पञ्चम्	५१–५४
८. भगतमाळ षष्ठ	५५–६२
९. परिशिष्ट	६३–६४

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सम्पादकीय प्रस्तावना

******

मात पितारी यादमें, उदय समरपै काव्य ।
वे बैठा वैकुंठमें, नारायणरे न्याव ।।

ब्रह्मदासजी दादूपंथी साधु थे । उनके गुरुका नाम हरनाथजी था । वे पोकरण मारवाड़के समीप माड़वा नामक गांवके वीठूशाखाके चारण जगाके पुत्र थे । उनका नाम विसनदान (विष्णुदान) था । वे अविवाहित थे । उनके कुटुम्बके वीठू चारण अब भी उसी माड़वा गांवमें विद्यमान हैं । उस समयकी चारणोंकी प्रथाके अनुसार उन्होंने बाल्यावस्थासे ही राजस्थानीमें काव्य, इतिहास व पौराणिक कथाएं आदि वडेरोंसे सुनसुन कर सीख ली थी और साधु होनेके पश्चात् तो उनका जीवन हरिभजन व शास्त्रश्रवण व अध्ययनमें ही व्यतीत हुआ । वे राजस्थानीके अच्छे कवि थे और साधु होनेके कारण ईश्वरका गुण-गान करना उनका कर्त्तव्य हो गया था । निदान उन्होंने ईश्वरकी महिमामें राजस्थानी भाषामें अनेक भगतमाळें व काव्य रचे ।

राजस्थानीमें कोई भक्तमाळ प्रकाशित नहीं हुई, इसीलिए मैंने इन ६ भगतमाळोंका संग्रह करके हिंदीमें टीका सहित तैयार किया है ।

ब्रह्मदासजी जोधपुर नरेश विजयसिंहजीके समयमें विद्यमान थे । इसका प्रमाण यह है कि उस नरेशने संवत १८१६ में पोकरणके वीर, बुद्धिमान व अनुभवी ठाकुर देवीसिंहजी आदि ४ बड़े सरदारोंको किले पर धोखा देकर पकड़वाये और मरवा दिये । तब देशके ऐसे प्रमुख नेताओंको व्यर्थ मारने तथा मारवाड़में और सरदारोंमें भयंकर फूट डाल कर देश व राज्यकी हानि करनेके लिए सरदारोंके कहने पर ब्रह्मदासजीने महाराजा विजयसिंहजीको उनके समक्ष उपालम्भ रूप राजस्थानी भाषामें एक गीत (काव्य) सुनाया जिस पर महाराज बहुत कुपित हुए परन्तु साधु व जातिसे चारण होनेके कारण कोई दण्ड तो नहीं दे सके पर इतना अवश्य कहा "साधु हो गए तो भी जाति-स्वभाव नहीं गया ।" अर्थात् ईश्वर भजनके हेतु गृहस्थका झंझट छोड़ कर साधु हुए फिर भी जातिके चारण हैं अतः नरेशोंकी आलोचनामें निर्भीक काव्य द्वारा कटु सत्य कहनेका जाति-स्वभाव नहीं छोड़ा । उस समय ब्रह्मदासजी वृद्ध थे । उस उपालम्भ वाले गीत काव्यका प्रथम दोहा (दुआळा) प्रमाणमें यहां पर दिया जाता है—

गीत वडो सांणोर

वडा मैवासां घालणौ जिला उथालणौ वैरी हरां ,
लड़ेवा चालणौ दळां सांमहौ लंकाळ ।
विहड़ां पालणौ देवौ झालणौ न हुतौ विजा ,
हकालणौ हुतौ दिली ऊपरा हठाळ ।। १

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दादूपंथी साधुओंके महन्तजी पूज्य श्री गंगादासजी महाराज कुचेरेवालोंका शुभ आगमन जोधपुरमें हुआ तब मैंने दादूजी महाराज व अन्य कई भक्तोंके विषयमें मेरी कुछ शंकाएँ मिटानेकी उनसे प्रार्थना की तो उनकी आज्ञासे उनके साथके दो साधु श्री चैनरामजी व श्री आसारामजीने (सूरदासजीने) मुझको उचित सहायता दी। अन्धभक्त आसारामजीने तो चतुर्थ भगतमाळके ५ या ६ छन्द अधिक लिखाए जो इसमें सम्मिलित कर दिए गए। कुछ सहायता परबतसरमें श्री गंगादासजी महाराजकी शिष्या ईश्वर-भक्त तपस्विनी पूज्य श्री मोहनबाईसे व उनकी प्रकाशित पुस्तक 'दादूजी महाराजकी जीवनी' से प्राप्त हुई। इन सब महात्माओंको धन्यवाद है।

प्रथम भगतमाळके कुल २० छन्द और चतुर्थ भगतमाळके ७६ छन्द होना कहे जाते हैं जिनके लिए मैंने मारवाड़में मेरी जातिके अनेक कवियों और अन्य सज्जनोंसे पूछताछ की और गांवोंमें भी गया परन्तु प्राप्त नहीं हुए, अतः जो मिले वे ही लिखे गए हैं।

अन्तमें राजस्थानी भाषा और साहित्यके इस प्रकाशनके लिए राजस्थान पुरातत्त्वमंदिरके यशस्वी वयोवृद्ध संचालक मुनिश्री जिनविजयजीको मैं धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता। आशा है कि उनके द्वारा आगे भी राजस्थानीके उत्कृष्ट काव्य निरंतर प्रकाशित होते रहेंगे।

लक्ष्मीदानात्मज
उदयराज उज्ज्वल
गांव ऊजळां (मारवाड़)
हाल ऊजळांकी हवेली,
जोधपुर

तारीख २०–४–१९५९,
जोधपुर

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

* श्री *

ब्रह्मदासजी कृत

भगतमाल

प्रथम

\+\+\+\+\+\+\+\+\+\+

दूहौ–केसव गुण गावण करूं, श्री गुरुदेव सहाय।
ऊजळ घट बुध ऊपजै, विघन विलै हुय जाय॥ १

अर्थ–मैं श्री भगवानके गुणगानका काव्य प्रारम्भ करता हूँ। मेरे गुरुदेव मेरी सहायता करें जिससे मेरे शरीरमें उज्वल बुद्धि (काव्यशक्ति) उत्पन्न हो और सब विघ्नोंका नाश हो जाय।

दूहौ–देखौ आद अनादसूं, राजी ह्वै श्रीरांम।
संतांरा संसारमें, किसड़ा सारै कांम॥ २

अर्थ–मनुष्य अनादिकालसे देखते आए हैं कि जब भक्ति द्वारा परमात्मा प्रसन्न होते हैं तब संसारमें अपने भक्तोंकी रक्षा व सम्मानके वास्ते कैसे-कैसे असम्भव कार्य वे स्वयं कर देते हैं?

दूहौ–ऊचरतां सुख ऊपजै, सुणतां आवै स्वाद।
कहियौ दांणव कोप कर, हर पर हर पहलाद॥ ३

अर्थ–भगवानकी महिमाकी कथाको कहनेसे हृदयमें आनन्द उत्पन्न होता है और सुनने से भी प्रसन्नता होती है, यथा हिरणाकुश राक्षसने कुपित होकर अपने पुत्र (प्रहलाद) से कहा था कि हे प्रहलाद! तूं अपना हठ (राम नाम भजना) छोड़ दे।

दूहौ–दूठ घणोई दाखियौ, पूठ न दी पर पक्क।
मूंठ खड़ग हथ मेलतां, कीधी ऊठ कड़क्क॥ ४

अर्थ–दुष्ट हिरणाकुशने प्रहलादको बहुत कुछ कहा, धमकाया परन्तु वह

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(बालक) दृढ़ रहा व भगवानके विमुख नहीं हुवा अर्थात् राम नाम जपना नहीं छोड़ा। अन्तमें हिरणाकुशने उस (प्रहलाद) को मारनेके वास्ते तलवारकी मूंठ पर हाथ देकर अर्थात् तलवार म्यानसे निकाल कर—उठ कर हाक मारी।

छन्द रोमकन्द

करके तरवार ग्रहे हिरणाकुस,
मूढ़ निरोस निवार मुड़ै:
सुतके बल एक मुरार तणौ सज,
थंभ विडार गिलार थड़ै।
वर वे दस च्यार उबार भली विध,
मार लियौ किण और मरै।
ग्रहियां व्रिद लाज उबारण ग्रायक,
काज इसा महाराज करै।
जिय काज इसा महाराज करै। १

अर्थ—हिरणाकुश हाक करके खड्ग लेकर क्रोधसे उस शान्त व असहाय बालकको मारनेको झुका अर्थात खड्ग मारने लगा। उस (बालक) के तो केवल ईश्वरका ही आश्रय था अथवा ईश्वरकी शरणका बल था। अत: अपने भक्तकी रक्षा करनेके हेतु श्री भगवानने स्थम्भमें से (नरसिंह अवतारके रूपमें) प्रकट होकर, भयंकर गर्जना करके हिरणाकुशका गला पकड़ लिया। वाहु-युद्ध किया और जो १४ वरदान उसको दे रखे थे उनका पूरी तरहसे पालन करते हुए, उस राक्षसको मार डाला, जो किसी अन्यसे नहीं मारा जाता था। इस प्रकार यह निश्चय है कि अपने भक्तकी रक्षा व सहायता करनेके कर्त्तव्यका पूरा ध्यान श्री भगवानको है, इसी वास्ते वे ऐसे काम करते हैं।

विडार—फाड़ कर। गिलार—गर्दन। थड़ै—वाहु-युद्ध किया। उबार—बचा कर, पाल कर। व्रिद—विरुद, कर्त्तव्य।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जळ भीतर ग्राव मचाय महाजुध,
कंटक लीध दबाय करी।
गळळावत सूंड रही दुय अंगुळ,
हेत घणौ पंखराय हरी।
चढ़ ऊतर धाय चलाय सु चक्कर,
राख लियौ अपणाय ररै।
अहियां ब्रिद लाज उबारण ग्रायक,
काज इसा महाराज करै।
जिय काज इसा महाराज करै। २

अर्थ—गण्डकी नदीके जलमें मगरमच्छने (१ हजार वर्ष तक) बड़ा युद्ध करके हाथीको दबा लिया था। तब डूबते हुए हाथीके पेटमें पानी भरने लगा जिससे अन्तमें स्वभावत: गलगल शब्द निकलने लगा। उस समय वह (हाथी) रक्षार्थ राम शब्द लेकर हरिको पुकारा और राम शब्दका प्रथम अक्षर 'र' मात्रही कह सका,—पूरा शब्द नहीं कह सका क्योंकि मच्छने उसको पानीमें खींच लिया था। तब भक्तकी पुकार सुन कर बहुत स्नेहके साथ श्री भगवान उसकी सहायता पर आए। प्रथम तो गरुड़ पर सवार हो कर चले परन्तु हाथीमें विपदा अधिक थी तो गरुड़से उतर कर स्वयं दौड़े। उससे भी विलम्ब होती देख कर सुदर्शनचक्र चला कर मच्छको मारा व हाथीको बचाया। इस प्रकार एक 'र' अक्षरके उच्चारणसे ही भगवानने अपना भक्त मान कर हाथीको बचा लिया। अत: यह निश्चय है कि अपने भक्तकी रक्षा करनेके कर्त्तव्यका ध्यान श्री भगवानको है, इसी वास्ते वे ऐसे कार्य करते हैं।

संत सेन निपाप चले नृप सेवन,
भावत विच मिळाप भयौ।
अह लाये छाप जिकां सिर गाढ़ी,
पेम अमाप धणी पठियौ।

अपणाय—अपना भक्त समझ कर। भावत—अकस्मात, मनोवांछित।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

विण रूप खवास संताप निवारण,
माधव आप गयौ मुजरै।
अहियां ब्रिद लाज उबारण आयक,
काज इसा महाराज करै।
जिय काज इसा महाराज करै। ३

अर्थ–सेनभक्त (नाई) रामानन्दके चेले व माधवगढ़के निवासी शुद्ध भावसे अपने राजाकी सेवा करने घरसे राजद्वारको जा रहे थे। मार्गमें अकस्मात् या उसकी इच्छाके अनुसार साधु मिला। तब वह राजद्वार जाना तो भूल गया और उस साधुको अपने घर पर (भोजन करानेके हेतु) ले गया क्योंकि उस साधुके ईश्वरकी छाप थी। जो राजासे ऊपर है अर्थात् हिन्दू परम्पराके अनुसार साधु भगवानके भरोसे संसारसे विरक्त होता है और उसका भरण-पोषण उसी (ईश्वर) के भरोसे पर होता है अथवा उस साधुके द्वारिकाकी छाप लगी हुई थी। इस वास्ते सेनभक्तने मनमें मान लिया कि उस साधुको परमात्माने बहुत कृपा करके उसके पास भेजा है। उधर सेनके मनमें राजाकी सेवामें अनुपस्थितिकी भी चिन्ता हुई, तब उसका कष्ट मिटानेके वास्ते श्री भगवान स्वयं सेनका रूप धारण करके राजाके पास गए व उसकी सेवाकी। इस प्रकार यह निश्चय है कि अपने भक्तकी रक्षा करनेके कर्त्तव्य का ध्यान श्री भगवान को पूरा है, इसी वास्ते वे ऐसे कार्य करते हैं।

सिवरी मत भंग भयौ जिण सेती,
खार हुवौ जळ गंग खरौ।
कहियौ रिख दंग कहा अब कीजिये,
ढंग नकौ हरि अंग धरौ।
निज अंग लगाय सुचंग कियौ नह,
नीर सुचंग कियौ जनरे।
अहियां ब्रिद लाज उबारण आयक,

मत–विचार, मार्ग स्वच्छ करके ऋषियोंकी सेवा करनेका शबरीका मत-धर्म। जन–तुच्छ सेवक अर्थात् भक्त शबरी।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

काज इसा महाराज करै।
जिय काज इसा महाराज करै । ४

अर्थ–ईश्वर-भक्त शबरी (भीलड़ी) को जब ऋषियोंने अछूतके नाते तालाब पर जानेसे रोक कर अपमान किया तब उन ऋषियोंके उस नित्य स्नान करने वाले सुलता नामक तालाबका जल, जो गंगाजलके समान मीठा था, खारा व अशुद्ध हो गया और जब श्री रामचन्द्र शबरीकी झोंपड़ी पर गए तब ऋषि लोग भी वहां गए। महाराजसे निवेदन किया कि चरण छू कर जल मीठा व शुद्ध करें। महाराजने जलमें चरण डाले तो भी मीठा नहीं हुआ। उन्होंने कहा—तुमने ईश्वर-भक्त शबरीका अपमान किया इसलिए उससे कहो। तब ऋषियोंके आग्रह पर शबरीने जलमें चरण डाले, तब जल उसी क्षण गंगाजलके समान मीठा व शुद्ध हो गया। इस प्रकार भगवानने स्वयंके अंगसे तो जल शुद्ध नहीं किया अपितु अपनी सेविका तुच्छ भीलड़ीके अंगसे शुद्ध कर दिया। इस प्रकार अपने भक्तकी रक्षा व सम्मानका ध्यान श्री भगवानको पूरा है, इसी वास्ते ऐसा कार्य करते हैं।

मातङ्ग ऋषिके आश्रममें अन्य ऋषियोंने शबरीको अछूतके नाते मार्ग स्वच्छ करने आदि सेवाके कार्य करनेसे व तालाब आनेसे मना कर दिया था, तब उनके तालाब सुलताका जल अशुद्ध हो गया था। फिर जब रामचंद्र वहां गए तब ऋषियोंने अपना कष्ट कहा। रामचन्द्रने कहा—तुम लोगोंने किसी भक्तको सताया होगा। अन्तमें उन्होंने कहा—हमारे चरणोंसे शुद्ध नहीं होगा। शबरीको कह कर उसके चरणोंको जलसे छुआओ। ऋषियोंने शबरीकी प्रार्थना की। उसने जल छूआ तब वह शुद्ध हो गया। ऋषियोंने अपने अपराधकी क्षमा मांगी। भगवानने भक्तका सम्मान रखा। इस विषयका पुरातन दोहा—

अधिक वधावत आपतें, जन मैं'मा रघुवीर।
सिवरी पद रज परसतां, सुध भौ सलिता नीर॥ १

दुरजोधन वीर करे ग्रह द्रोपां,
खांच सभा बिच चीर खड़ी।

ग्रह–पकड़ कर।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पचियौ पण भीर हुवौ परमेसर,
चीर न खूटोय सोभ चड़ी।
दुसटी तिल मात सरीर न दीठौ,
भारत साख गंभीर भरै।
ग्रहियां व्रिद लाज उबारण ग्रायक,
काज इसा महाराज करै।
जिय काज इसा महाराज करै। ५

ग्रर्थ–प्रबल दुर्योधनने दुःशासन द्वारा द्रोपदीका हाथ पकड़वा कर, सभामें खड़ी करवा कर उसको नग्न करनेके वास्ते उसके शरीर पर से चीर खिंचवाया ग्रौर इस हेतु (चीर खींचनेमें) बहुत परिश्रम किया गया। परन्तु उस भक्त (द्रोपदी) का सहायक परमेश्वर हो गया। ग्रतः दुःशासन चीर खींचता २ थक गया ग्रौर चीर बढ़ता गया व उसका ग्रन्त ग्राया ही नहीं जिससे द्रोपदीकी शोभा ग्रधिक बढ़ी ग्रौर दुष्ट दुर्योधन द्रोपदीके शरीरका थोड़ासा भी भाग नंगा नहीं देख सका। ग्रर्थात भगवानने उसकी लज्जाकी रक्षा की। इस वार्ताकी साक्षी गहन महाभारत पुराण देता है। इस प्रकार यह निश्चय है कि ग्रपने भक्तकी रक्षा करनेके कर्त्तव्यका ध्यान श्री भगवानको पूरा है, इसी हेतु वे ऐसे कार्य करते हैं।

दिलां ग्रपणाय भली विध दादू,
केतिय वार सहाय करी।
प्रतका पलटाय ग्रनै व्रद पैठौ,
रूप सिरीख वणाय हरी।
इनमी गज धाय चलार ग्रायौ,
पाय लगाय'र कीध परै।
ग्रहियां व्रिद लाज उबारण ग्रायक,
काज इसा महाराज करै।
जिय काज इसा महाराज करै। ६

व्रिद–विरुद, कर्त्तव्य। सिरीख–बराबर।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

अर्थ—परमात्माने दादूको अपना प्रिय भक्त मान कर अनेक बार उसकी सहायता की यथा साँभर नगरमें मुसलमानी राज्यमें बिलंदखांन खोजाने दादूको जेलखानेमें रख दिया था तब भगवानने अपना विरद विचार कर दादूके जैसा शरीर धारण कर उसके स्थानमें स्वयं जेलमें बैठ गए जिससे जेलके अन्दर व बाहर दादूके दो शरीर देख कर खोजा घबराया व क्षमा मांग कर उसको सताना छोड़ दिया और इसी प्रकार जब मस्त हाथी दादूको मारनेके लिए उस पर झपटा तो उसको भी भगवानने दादूके चरण छुआ कर दूर हटा दिया। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि अपने भक्तकी रक्षा करनेके कर्तव्यका ध्यान श्री भगवानको पूरा है, इसी हेतु वे ऐसे कार्य करते हैं।

दुख मेटण पोट कबीर घरां दिस,
हाकल कीध वईर हरी।
करवा दुय चीर सरीर झुकायौ,
कांप रयौ हमगीर करी।
बकियौ जद मीर महाबद बोल्यौ,
डाच कंठीरव तास डरै।
अहियां व्रिद लाज उबारण आयक,
काज इसा महाराज करै।
जिय काज इसा महाराज करै। ७

अर्थ—कबीर काशीका जुलाहा था। गृहस्थी था। रामानन्दजीका चेला था। राम-राम भजता। ईश्वरका परम भक्त था। वहांके ब्राह्मण लोग उससे अप्रसन्न थे। अतः उस दीनका अपमान करानेके हेतु ईर्षासे उन्होंने नगरमें व बाहर भिक्षुओंको कबीरके घर भिक्षा लेनेका न्योता फिरा दिया। फलतः हजारों भिक्षुक कबीरके घर एकत्रित हो गए तो भगवानने कबीरका कष्ट मिटाने व मान रखनेके हेतु स्वयंने बैलों पर नाजकी बोरियें लाद कर उस पोठको कबीरके घरकी तरफ रवाना किया। वहां पहुँचा दिया। जिसमेंका अनाज भिक्षुओंको देने पर भी बच गया। इससे विरोधी ब्राह्मण लोग तो लज्जित हुए और कबीरकी शोभा चारों तरफ बढ़ गई।

वईर—रवाना। मीर—बादशाह। कंठीरव—सिंह। तास—त्रास।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

इसी प्रकार दिल्लीके बादशाह सिकन्दर लोदीने कबीरको चीरने अर्थात् मारनेके हेतु मस्त हाथी छोड़ा और जब कबीरने हाथीके सामने उसका अभिप्राय पूरा करनेके वास्ते शरीर झुकाया तो वह हाथी उस भक्तके रक्षकके चमत्कारसे कांपने लग गया व हट गया और जब बादशाह वका व कटु वचन बोला तो भगवानकी मायासे वहां एक सिंह मुंह फाड़े प्रकटा जिससे बादशाह डर गया, कबीरसे क्षमा मांगी व उसको छोड़ दिया। इस प्रकार अपने भक्तकी रक्षाके कर्त्तव्य का ध्यान श्री भगवानको पूरा है, इसी वास्ते वे ऐसे कार्य करते हैं।

भवनौ अमराव दया मन भारी,
दाव लखाव किणी'क दियौ।
दिल भूपत चाव लगौ खग देखण,
काढ़त वीज सळाव कियौ।
सब मेटि अभाव बडौ दरसायौ,
संत प्रभाव धणी सबरै।
अहियां बिद लाज उबारण आयक,
काज इसा महाराज करै।
जिय काज इसा महाराज करै। ८

अर्थ—उदयपुर महाराणाके पास भवना (भुवानसिंह) नामक एक लाखकी जागीर वाला चहुवान राजपूत सरदार था जो ईश्वरका भक्त था। उसके दया बहुत थी अतः वह जब महाराणाकी सेवामें जाता तो पक्की मूंठके नीचे म्यानमें काठकी तलवार रखता ताकि उससे कभी हिंसा न हो सके, क्योंकि उसके हाथसे महाराणाकी सेवामें पहिले एक गर्भवती हरिणी तलवारसे मारी जा चुकी थी। तबसे उसने लोहेकी तलवार रखना त्याग दिया था और केवल दिखावेके वास्ते इस प्रकार काठकी तलवार रखता था। यह भेद (काठकी तलवार रखनेका) किसीने महाराणाको दे दिया तब उन्होंने भवनाकी खड़ग देखनेके मिससे म्यानमेंसे निकाली तो भक्तोंकी लज्जा रखने वाले ईश्वरकी मायासे वह खड़ग बिजलीके समान प्रकाश करती हुई निकली।

दाव—चाल; युक्ति (लकड़ीकी तलवार रखनेकी चाल या युक्ति)।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

उस ऐश्वरीय घटनाके प्रभावसे वहां पर विद्यमान लोगोंमें, जिनके मनमें भगवानका भाव नहीं था, भाव हो गया अथवा सबके स्वामी भगवानने अपने भक्तके प्रभावको बहुत बड़ा दिखाया। इस प्रकार यह निश्चय है कि अपने भक्तकी सहायता व रक्षाके कर्त्तव्यका ध्यान श्री भगवानको पूरा है, इसी वास्ते वे ऐसे कार्य करते हैं।

महाराणाने भवनसिंहको अधिक जागीर दी व राज्यकी नियत सेवामें उपस्थित होनेसे माफ कर दिया व घर बैठे ईश्वर-भजन करने की आज्ञा दे दी।

सिवरी कुळ भील कुचील सरीरी,
चाखत बोर रसील संचे।
गहावत ढील करी नह गोविंद,
वीच अंगीर मंजार वंचे।
सिरियादे पीत क्रपा विण समरथ,
ठाह हुवे किम डील ठरै।
अहियां व्रिद लाज उबारण आयक,
काज इसा महाराज करै।
जिय काज इसा महाराज करै। ९

अर्थ—शबरी जो अछूत जातिकी भीलनी थी और निर्धन होनेसे मैली-कुचैली थी परन्तु जब वह भगवान रामचन्द्रके वास्ते चख चख कर मीठे बेर लाई, जो जूठे हो चुके थे, जिसका उसको ज्ञान नहीं हो सका, क्योंकि उसके घर पर भगवानके आनेसे वह प्रेममें इतनी मग्न हो गई थी कि बाकी सब बात भूल गई थी। अतः भगवानने बिना किसी भेद व संकोचके उन जूठे बेरोंको प्रसन्नतापूर्वक तुरन्त खा लिया (क्योंकि ईश्वरके समीप कोई भेदभाव व छूत अछूत नहीं है। वह तो केवल सच्चो भक्तिका ग्राहक है)। इसी प्रकार बिल्लीके बच्चोंको जलती हुई अग्निमें से भगवानने बचाया जबकि भक्त सिरियादेने पुकार की थी, यह सर्वविदित है कि ईश्वरकी कृपा होने से वे बच्चे किस भांति अपने स्थान पर यथावत रहे व उनके आंच तक नहीं आई व जीवित निकले। इस प्रकार यह निश्चय है कि अपने भक्तकी रक्षा करनेके कर्त्तव्यका ध्यान श्री भगवानको पूरा है, इसी वास्ते वे ऐसे कार्य करते हैं।

ठाह—स्थान।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मिळिया अनुकेत खुद्यावसु मारग,
मांन महातम सेत मनौ।
सह रोटी बीज समेत संतांनां,
ढील न लायौ देत धनौ।
खड़ आयौ रेत विखै हळ खाली,
खेत निपाय्यौ हेत खरै।
अहियां ब्रिद लाज उबारण आयक,
काज इसा महाराज करै।
जिय काज इसा महाराज करै। १०

अर्थ–धना जाट जो बाल्यावस्थासे ईश्वरका भक्त था, हल खड़नेको अपने खेत जा रहा था। मार्गमें अनुकेत आदि सन्त मिल गए जिन्होंने धनासे कहा कि वे भूखे हैं। तब उसने अपने साथ जो रोटियें व बोनेके वास्ते बीजका अनाज था वह सब उन सन्तोंको दे दिया और माता-पिताके भयसे अपने खेत जाकर बगैर बीजके खाली रेतमें हल खड़ कर घर आ गया। परन्तु भगवानकी कृपासे खेतमें बहुत अन्न उत्पन्न हुवा। क्योंकि उसने सन्तोंको रोटियें व अन्न भगवानमें सच्चे भाव व प्रेमसे दिए थे। इस प्रकार यह निश्चय है कि अपने भक्तकी रक्षा करनेके कर्त्तव्यका ध्यान श्री भगवानको पूरा है, इसी लिए वे ऐसे कार्य करते हैं।

न दिये दुख लेस किणी जण नांमौ,
केसव वेस मजूर कियौ।
मंड पाव कळेस कळेस मिटावण,
देस कहै छज नेस दियौ।
रटतौ नित सेस रहै जिण कारण,
ध्यांन सिन्यास महेस धरै।

विखै–अन्दरमें। जण–जन। नेस–मकान।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ग्रहियां व्रिद लाज उबारण ग्रायक,
काज इसा महाराज करै।
जिय काज इसा महाराज करै। ११

ग्रर्थ–पुण्डरपुर निवासी नामदेव नामक ईश्वरके भक्त छींपा (जाति) के कच्चे मकानकी छांन छजनी थी। सामग्री सब एकत्रित करली गई थी परन्तु नामदेवमें मानव-प्रेमका ब्रह्मज्ञान इतना ग्रधिक था कि वह किसी मनुष्यको ग्रपने कार्यके वास्ते कष्ट देना नहीं चाहता था। तब ग्रपने भक्तका कष्ट मिटानेके हेतु भगवानने मजदूरका रूप धारण करके स्वयंने वह मंडप छज कर कष्ट उठाया ग्रथवा उस कठिन कार्यके वास्ते स्वयं गए।

यह बात सब जानते हैं कि भगवानने नामदेव छींपेकी छान छाई थी कि जिस भगवानकी महिमा शेषजी महाराज सहस्र मुखसे नित्य रटते रहते हैं ग्रौर जिनका ध्यान सब संन्यासी व स्वयं महादेवजी भी धरते हैं। इस प्रकार यह निश्चय है कि ग्रपने भक्तकी रक्षा करनेके कर्त्तव्यका ध्यान श्री भगवानको है, इसी वास्ते वे ऐसे कार्य करते हैं।

जब लूं नित नांम तिलोचन बोल्यौ,
भांमण भीयड़ होम भिड़ै।
करवा ग्रह काज इसौ मोय ग्रागळ,
मांणस कोय लिलांम मिळै।
वरणूं जद रांम रया वणियेरै,
तेरेई मास गुलाम तरै।
ग्रहियां व्रिद लाज उबारण ग्रायक,
काज इसा महाराज करै।
जिय काज इसा महाराज करै। १२

ग्रर्थ–शाहपुरा (मेवाड़) के तिलोकचन्द नामक भक्त महाजन (वैश्य) ने जो ईश्वर-भजन व हवन करना चाहता था—मनमें विचारा कि मैं वह कार्य उस समय करूं जबकि उसकी पत्नी भी उस तपमें उसके साथ रहे ग्रौर उस समय

भीयड़–साथी। भिड़ै–समीप। तरै–तरह, समान।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तक उसके घरका काम करनेके वास्ते कोई सेवक मोल मिल जाय (दामसे नौकर रहे) तब उस भक्तकी इच्छा-पूर्ति हेतु स्वयं भगवान उस वैश्यके पास १३ महिनों तक सेवक बन कर रहे और उसकी सेवा की। इस प्रकार यह निश्चय है कि अपने भक्तकी रक्षा व सहायता करनेके कर्त्तव्यका ध्यान श्री भगवानको है, इसी वास्ते वे ऐसे कार्य करते हैं।

करड़े मचकूर चले कव चौमौ,
जात मुरार हजूर जठै।
रथवासण भूर रयौ विच रोई,
तूट थयौ महमूर तठै।
धरियौ कंध दूर हुवे जद धंमळ,
दीध मनोरथ पूर दरै।
अहियां व्रिद लाज उबारण आयक,
काज इसा महाराज करै।
जिय काज इसा महाराज करै। १३

अर्थ–चौमौ (चौमुख) नामक चारण भक्त वीरान जंगलमें (रेगिस्तानमें) जहां जल न होनेके कारण करड़ी मंजिल करके (अधिक चल कर) भगवानके विराजनेके स्थान अर्थात् द्वारकाको दर्शन करनेके हेतु रथमें बैठ कर जा रहा था तब एक बैलकी हड्डी टूट गई जिससे वह चलनेके योग्य नहीं रहा। वह रथसे हट गया। उस विपदामें ईश्वरकी कृपा व मायासे एक अन्य बैल वहां उसी समय उपस्थित हुवा व रथके जुत गया और भक्तका मनोरथ सिद्ध कर दिया, अर्थात् द्वारका तक रथको पहुंचा दिया।

इस प्रकार यह निश्चय है कि अपने भक्तकी सहायता व रक्षा करनेके कर्त्तव्यका ध्यान श्री भगवानको पूरा है, इसी वास्ते वे ऐसे कार्य करते हैं।

नहचै मन राख लिखी नरसींगे,
हुंडी समरथ जांण हरी।

रथवासण–बैल।
रोई–वीरान जंगल (रेगिस्तान)। धंमळ–बैल। दरै–सर्व प्रकारसे, दृढ़तासे।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

विण सांवळ वाच वखांण भली विध ,
कंठ लगाय प्रमांण करी ।
न भरै जद वात रसांण न आवै ,
साहपणौ किम हांम सरै ।
अहियां बिद लाज उबारण आयक ,
काज इसा महाराज करै ।
जिय काज इसा महाराज करै । १४

अर्थ—नरसी भक्तने भगवानको सर्वसमर्थ जान कर पूर्ण विश्वाससे उन पर रु० ७००) की हुण्डी लिखी थी और भगवानने भी अपने भक्तका मान रखनेके हेतु सांवलशाह (श्याम रंग वाला) नामक महाजन बन कर हुण्डी पढ़ कर सराहना करके व उसको अपने कंठ लगा कर (सम्मान करके) पटाई अर्थात् रुपये चुका दिये क्योंकि भक्तकी लिखी हुई हुण्डी यदि न सिकरे तब तो बात अच्छी नहीं दिखे, और साहूकारेमें भी वट्टा लग जावे । इस प्रकार यह निश्चय है कि अपने भक्तकी सहायता व रक्षा करनेके कर्त्तव्यका ध्यान श्री भगवानको पूरा है, इसी वास्ते वे ऐसे कार्य करते हैं ।

मुखती हर पास निभावण मीरां ,
भोग-विलास उदास भई ।
दिन ही दिन दास उपासत देखे ,
देसधणी हिक त्रास दई ।
न हुवौ घट नास पियौ विष पेमल ,
जास धणी बळ तास जरै ।
अहियां बिद लाज उबारण आयक ,
काज इसा महाराज करै ।
जिय काज इसा महाराज करै । १५

रसांण—ढंग, उपयुक्त । मुखती—मुक्ति, मोक्ष । त्रास—ताड़ना, दण्ड । तास—तिसको अर्थात् विषको । जरै—पचाया ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अर्थ–मीरां बाई ईश्वर-भजनसे अपना मोक्ष चाहती थी । अतः उसको अपने पतिके साथ भोगविलास करनेमें रुचि नहीं थी और उस दुविधामें उदास रहती थी, और उधर महाराणाने प्रतिदिन उसको भगवानकी उपासनामें लीन होते देख कुपित होकर उसको मारनेके लिए पेमलबाई (वास्तविक नाम) को अथवा (खींचातानके अर्थसे) ईश्वरसे प्रेम रखने वालीको विष पिला दिया तो भी वह नहीं मरी। कारण कि उसके (मीरांके) स्वामीके (परमात्माके) बलसे विषको भी वह पचा गई । इस प्रकार यह निश्चय है कि अपने भक्तकी रक्षा करनेके कर्त्तव्यका ध्यान श्री भगवानको पूरा है, इसी वास्ते वे ऐसे कार्य करते हैं ।

नोट—उपर्युक्त काव्यसे पाया जाता है कि मीरांका नाम वास्तव में पेमलबाई था परन्तु भक्तिके कारण व मानव-प्रेम, सज्जनता व उच्चकुलोत्पन्नके (राज्य कुलके) कारण बादमें मीरां नाम हो गया । मरुभाषामें मीरां, मीरांसाका अर्थ उच्च कुलका व भला व सज्जनताका है । यह शब्द फारसी भाषाके शब्द मीर-अमीरसे आया है । काकाका नाम जैमल, भतीजीका नाम पेमल मेरे इस अर्थको सहायता देते हैं ।

मन मूरत और न आये जैमल,
वैरिय राव मंडोर विलै ।
अत सोर मचाय लियौ वित आगळ,
टेकस नन्दकिसोर टळै ।
चढ़ डीलां जोर संग्रांम मचायौ,
धेनुव वाळी पीत धरै ।
अहियां व्रिद लाज उबारण आयक,
काज इसा महाराज करै ।
जिय काज इसा महाराज करै । १६

अर्थ–मेड़तेके स्वामी जैमल राठौड़ अपने नित्य नियमके अनुसार चारभुजाके पूजनमें ध्यान लगा कर बैठे हुए थे । उस समय उसके शत्रु मंडोवरके राव मालदेवकी सेनाने हल्ला करके मेड़तेकी गायें घेर ली । जैमल तो ईश्वर-पूजनमें बैठा था, अन्य बातकी तरफ वह ध्यान नहीं दे सकता था, क्योंकि वैसा

वित–मवेशी-धन । वाळिय, वाळी–वापस लाए ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

करनेसे उसकी चारभुजाके अखंड पूजनका वृत टूटता था। अतः अपने भक्तकी दृढ़ भक्तिको देख कर उसका मान रखनेके हेतु प्रीतिसे भगवानने जैमलका रूप धारण करके घोड़े पर सवार होकर मंडोवरकी सेनाका पीछा किया और प्रवल युद्ध करके उसको पराजित किया व गायें छुड़ा कर वापस ले आए। उस युद्धमें भगवानके एक कानका कुण्डल गिर गया था जो मूर्तिके न होनेसे जैमलजीने युद्ध-स्थलसे तलाश करवा कर मंगवा कर पहिनाया। इस प्रकार यह निश्चय है कि अपने भक्तकी सहायता व रक्षा करनेके कर्त्तव्यका ध्यान श्री भगवानको पूरा है, इसी वास्ते वे ऐसे कार्य करते हैं।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

* श्री *

ब्रह्मदासजी कृत

भगतमाळ

द्वितीय

दूहौ–वंदण श्री गुरुदेवकूं, जिण काटे जंजाळ।
मूझ सुणाया मैर कर, गुण थारा गोपाळ॥ १

अर्थ–मैं अपने गुरुदेवको नमस्कार करता हूं, जिन्होंने मुझे सद् उपदेश दे कर मेरे हृदयसे अज्ञान रूपी जालको मिटाया और कृपा करके हे भगवान आपके गुण सुनाए।

दूहौ–संतां सायक तूं सदा, दुसटां खायक देव।
केसव तौ वरणन करूं, भल गुरु दीनौ भेव॥ २

अर्थ–हे ईश्वर, आप सदा अपने भक्तोंके सहायक हैं और दुष्टोंका क्षय करने वाले हैं। मैं आपका वर्णन करता हूं, जैसा कि मेरे गुरुने मुझे अच्छा ज्ञान दिया है अथवा रहस्य बताया है।

दूहौ–ठग धोमर भोळा ठगे, दगदग्गे देवीस।
ले कंकण जाळण लगे, अर उठ भग्गे ईस॥ ३

अर्थ–भस्मासुर राक्षस महादेवको ठग कर उनसे कंकण लेकर उनको ही भस्म करने लगा तब शिवजी उसके आगे भागे।

छन्द त्रिभंगी

ईसर उठ भग्गा, धोमर अग्गा,
बेवे नग्गा लग बग्गा।

दगदग्गे–तेजीसे भागे।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

हुय नार सुहग्गा, मिळियौ मग्गा,
दांणव पग्गा रच दग्गा।
ललचायौ ठग्गा, नाचण लग्गा,
सीस करग्गा विणसंतू।
धिन हौ दुख वारण, काज सुधारण,
भगत उधारण भगवन तू।
जिय भगतां तारण भगवन तू। १

अर्थ–महादेव उठ कर धोमर राक्षसके आगे भागे। दोनों (ईश व राक्षस) तेजीसे दौड़े। दौड़में राक्षस महादेवजीके बहुत समीप आ गया तब उस दानवके वास्ते छल रच कर विष्णु सुन्दर सुहागिन स्त्रीका (मोहिनीका) रूप धारण करके मार्गमें मिले। यह ठग (राक्षस) मोहिनी रूप देख कर ललचा गया और उसके कहनेके अनुसार नाचने लग गया, अतः जब कंकण वाला हाथ उसके मस्तक पर आया तब वह (राक्षस) भस्म हो गया। इस प्रकार भक्तका दुःख निवारने वाले, उसका कार्य सफल करने वाले व तारने वाले दयालु भगवानको धन्य है।

हिरणाकुस खहड़े, पुत्र न पहड़े,
सौ पर उरड़े, खग सुरड़े।
खंभा जब बड़ड़े, सुररथ खड़ड़े,
अंबर दड़ड़े, धर धड़ड़े।
गज रिफ हुय गड़ड़े, आयौ अड़ड़े,
दांणव भड़ड़े, नखदंतू।
धिन हौ दुख वारण, काज सुधारण,
भगत उधारण भगवन तू।
जिय भगतां तारण भगवन तू। २

खहड़े–डांटा। पहड़े–विचलित। उरड़े–लपका। सुरड़े–खींच कर, शीघ्रतासे म्यानमेंसे (तलवार) निकाल कर। बड़ड़े–बड़ड़ाट शब्द करता हुवा फटा। खड़ड़े–खड़खड़ाए, कांपने लगे। दड़ड़े–जोरके शब्दसे भर गया। धड़ड़े–धरराट शब्द करके धूजने लगी। गड़ड़े–झपटे। अड़ड़े–दहाड़ कर। भड़ड़े–चीरा, नखोंसे फाड़ा।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अर्थ–हिरणाकुशने डांटा तो भी उसका पुत्र प्रह्लाद अपने पथसे (राम नाम भजनेसे) विचलित नहीं हुवा—तब उस पर आक्रमण किया व खड्ग म्यानसे निकाली तो स्तम्भ फटा, भयंकर शब्दके साथ जिस पर देवताओंके विमान (जो भगवानके नृसिंह अवतार लेने पर आकाशमें आए थे) उस शब्दके कारण खड़खड़ाने लग गए। आकाशमें वह भयंकर शब्द भर गया। पृथ्वी कांपने लग गई। भगवान सिंहका (नृसिंहका) रूप धार कर झपटे (हिरणाकुश पर) और दहाड़ कर उसके समीप जाकर पकड़ा व उस दानवको नख व दांतोंसे चीरा। इस प्रकार भक्तके कष्ट मिटाने वाले, कार्य सुधारने वाले व उद्धार करने वाले, दयालु भगवानको धन्य है।

नीवाह् लगाय, झळ निकळाया,
धोम सवाया धड़ड़ाया।
सिरियादे धाया, करौ सहाया,
मिनड़ी जाया, मंझ आया।
ठंढा जब थाया, कुंभ उठाया,
खसता पाया खेलंतू।
धिन हो दुख वारण, काज सुधारण,
भगत उधारण, भगवन तू।
जिय भगतां तारण भगवन तू। ३

अर्थ–मिट्टीके कच्चे बर्तन अग्निमें पकाए जाते हैं उसको नीवाह् या नीवाई कहते हैं। सिरियादे नामक कुम्भारीके कच्चे बर्तनोंके ढेरमें एक बिल्लीने बच्चे दे दिए थे। उसकी अनुपस्थितिमें उस ढेर पर करंड घास-फूस डाल कर बर्तनोंको पकानेके वास्ते उस नीवाह्में आग लगा दी गई जिससे तेज ज्वाला निकली। प्रचंड अग्निके कारण धड़धड़ शब्द हुवा। तब सिरिआदे आई और भगवानका स्मरण किया और प्रार्थना की कि सहायता करो क्योंकि बिल्लीके बच्चे उस अग्निके बीचमें आ गए थे। जब नीवाई पूरी जल कर

नीवाह–कुम्भारके यहां कच्चे माटीके वर्त्तन अग्निसे पकानेका स्थान व बर्त्तन व करंड घास-फूसका समूह। **धड़ड़ाया**–धड़धड़ शब्द करती हुई प्रचंड हुई। **खसता**–बनावटी कुश्ती (रोलिएं) करते हुए अर्थात् खेलमें बनावटी लड़ाई करते हुए, जैसा कि बच्चोंका स्वभाव होता है।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ठंडी हुई, तब पके हुए घड़े उठाए गए तो बिल्लीके बच्चोंको वहां पर आपसमें रौळियें करते व खेलते पाए। इस प्रकार अपने भक्तका दुःख मिटाने वाले, कार्य सुधारने वाले व उद्धार करने वाले दयालु भगवानको धन्य है।

अंबरीस सुध्यायौ, तुज अपणायौ,
भजन सवायौ, मन भायौ।
दुरवासा आयौ, आय डरायौ,
चकर चलायौ, विचळायौ।
तूभुवन भटकायौ, कह्र तपायौ,
नूपत छुडायौ, नासंतू।
धिन हो दुख वारण, काज सुधारण,
भगत उधारण भगवन तू।
जिय भगतां तारण भगवन तू। ४

अर्थ–राजा अम्बरीषने, हे भगवान, तुझको भजा व अपना लिया अर्थात् तुझको अपना सर्वस्व मान लिया (स्वयंको तेरे अर्पण कर दिया) जिससे भजनमें सवाया मन लग गया अथवा भजन प्रिय लगा। तब दुर्वासा आया, कुपित होकर राजाको डराया, जटासे काल-कृत्या अग्नि उत्पन्न करके राजाको भस्म करना चाहा। तो भगवानने सुदर्शन चक्र चलाया जिसने उस अग्निको मिटा दिया व दुर्वासाको मारने लगा तो वह तीन लोकमें प्राण बचानेके वास्ते सर्वत्र भटका परन्तु कहीं भी शरण नहीं मिली। ईश्वरीय कोपसे संतप्त हो गया, अन्तमें (श्री भगवानकी आकाशवाणीसे) उसी भक्त राजा अम्बरीषको शरण गया तो उसने भगवानसे प्रार्थना करके दुर्वासाको सुदर्शन चक्रसे बचाया। इस प्रकार अपने भक्तका दुःख दूर करने वाले, कार्य सुधारने वाले व उद्धार करने वाले दयालु भगवानको धन्य है।

दुर्वासा राजा अम्बरीषके न्योता देने पर स्नान करनेको गया था। देर हो गई, आया नहीं तब राजाने द्वादशी समाप्त होते देख कर ब्राह्मणोंकी आज्ञा लेकर पारणा खोलनेके कारण नारायणका चरणामृत ले लिया था, जब दुर्वासा स्नान करके आया, चरणामृत लेनेका वृत्तान्त सुना तो कुपित

सवायौ–सवाया, सुवाया। कह्र–कोप, दुःख।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

होकर राजाको मारनेके हेतु जटाओंसे काल-कृत्य अग्नि उत्पन्न की जिसका सुदर्शन चक्रने नाश किया ।

दुरजोधन ठग्गूं, कीधौ दग्गूं,
पांडव पग्गूं, निपड़ग्गूं ।
लाखाग्रह लग्गूं, जाळा जग्गूं,
धोम अथग्गूं, धगधग्गूं ।
काढे करमग्गूं, साहि करग्गूं,
साचे सग्गूं, सामंतू ।
धिन हो दुख वारण, काज सुधारण,
भगत उधारण भगवन तू ।
जिय भगतां तारण भगवन तू । ५

अर्थ–दुर्योधन ठगने कपट किया, पांडवोंके वास्ते, जो उससे दबते नहीं थे, लाखागृहमें अग्नि लगा दी । उन्होंने (पांडवोंने) जाना कि जल जाएंगे, क्योंकि अग्नि अपार थी और धगधग शब्द करके बहुत वेगसे जलने लग गई थी । उस विपदामेंसे भी उनको (पांडवोंको) भगवानने सहायता करके, मार्ग करके निकाला, अतः सच्चोंका सम्बन्धी हे श्याम तू ही है । इस प्रकार अपने भक्तका दुःख निवारण करने वाले, कार्य सुधारने वाले व उद्धार करने वाले दयालु भगवानको धन्य है ।

अंबर माथारे, लैण उतारे,
कुरपत प्यारे ललकारे ।
पंडव ग्या हारे, नार पुकारे,
आव हमारे आधारे ।
तब चीर वधारे, सब हितियारे,
थवे नियारे थररंतू ।

पग्गूं–वास्ते । निपड़ग्गूं–नहीं पड़ने वाले, नहीं हारने वाले । सग्गूं– सम्बन्धी । माथारे–शरीरपरका (साड़ी) । वधारे–बढ़ाया । हितियारे–हत्यारे, दुष्ट, पापी । नियारे–अलग ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

धिन हो दुख वारण, काज सुधारण ,
भगत उधारण भगवन तू।
जिय भगतां तारण भगवन तू। ६

अर्थ—द्रोपदीका सभामें अपमान करनेके वास्ते उसके शरीर परकी साड़ी उतारनेका दुर्योधनने अपने प्रिय दुःशासनको ललकार कर कहा क्योंकि जूवेमें पांडव द्रोपदीको हार चुके थे। अतः वे बचनवद्ध होनेके कारण कुछ बोल नहीं सकते थे, तब वह असहाय स्त्री (द्रोपदी) उस विपदामें श्री कृष्णको पुकारी व स्मरण किया कि हे मेरे आधार, तू मेरी रक्षा करनेके वास्ते आ। उसी क्षण उसका (द्रोपदीका) चीर (साड़ी) बढ़ने लग गया और यह दैवी चत्म-कार देख कर दुर्योधन व उसके पक्षपाती सब दुष्ट उस अबलाके अपमान करनेके नीच कार्यसे रुक गए, हट गए, कांपने लग गए। इस प्रकार अपने भक्तके दुःख दूर करने वाले, कार्य सुधारने वाले व उद्धार करने वाले दयालु भगवानको धन्य है।

दूते कंठझेळू, थयौ दुहेळू ,
अज्जामेळू, अंतवेळू ।
करते पुत्र हेलू, नांम कहेलू ,
सब क्रमठेलू, छूटेलू ।
गासी उयवेळू, भाज गहेलू ।
तेरै सुहेलू, उणतंतू ,
धिन हो दुख वारण, काज सुधारण ,
भगत उधारण भगवन तू ।
जिय भगतां तारण भगवन तू । ७

अर्थ—यमराजके दूतोंने आ कर अजामिल नामक ब्राह्मणके कंठ पकड़े जिससे वह दुखी हुआ अन्त कालमें (क्योंकि वह पापी था, उसको नरकमें ले जाना था)

दुहेळू—दुखी। वेळू—समय। हेलू—पुकारा। पुत्र—अजामिलके पुत्रका नाम नारायण था। भाज—टूट जायेंगे, नाश हो जायेंगे। गहेलू—मार्ग, तात्पर्य परलोकके मार्गके कष्ट। तरे—तिरे। सुहेलू—सुगमतासे। उणतंतू—उस नारायण नामके प्रतापसे।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

उस विपदामें उसने अपने पुत्र नारायणको नाम लेकर पुकारा तो इस (नारायण) नामके प्रतापसे उसके सब दुष्कर्म दूर हो गए व उसका दूतोंसे छुटकारा हो गया और वैकुण्ठमें गया। अतः जो कोई उस समय अर्थात् अन्तःकालके समय भगवानका नाम लेगा अथवा ईश्वरको भविष्यमें भजेगा उसके लिए परलोकके मार्गके कष्ट मिट जायेंगे और वह उस भजनके प्रतापसे सुखपूर्वक संसारसे तिर जायगा। इस प्रकार अपने भक्तके दुःख दूर करने वाले, कार्य सुधारने वाले व उद्धार करने वाले दयालु भगवानको धन्य है।

अजामिल कन्नोजका ब्राह्मण था, पापी था। एक समय उसने सन्तोंको भोजन दिया, अपना वृत्तान्त सुनाया। उन्होंने कहा कि तेरे अब लड़का हो उसका नाम नारायण दे देना। उसने वैसा ही किया और उसी नामके प्रभावसे वह वैकुण्ठ गया।

जोरावर मीरूं, जड़े जंजीरूं,
नांख कबीरूं, बिच नीरूं।
तिर आयौ तीरूं, गज हमगीरूं,
चवै सरीरूं, कर चीरूं।
वमकार गहीरूं, आयौ भीरूं,
होय कंठीरूं, हड़ड़ंतू।
धिन हो दुख वारण, काज सुधारण,
भगत उधारण भगवन तू।
जिय भगतां तारण भगवन तू। ८

अर्थ—देहलीके प्रबल मुसलमान बादशाह सिकंदर लोदीने (काशीमें) सांकलसे बांध कर कबीर भक्तको गंगाजीमें डाला था तथापि ईश्वरकी दयासे वह उस दशामें भी नहीं डूबा अपितु तिर कर पानीके किनारे लग गया। तब उसी बादशाहने उस पर हाथी छोड़ा व हाथीको दक्काला कि उसके (कबीरके) शरीरको चीर डाल। उसी समय भयंकर गर्जना करके (ईश्वर) सहायता पर आया, सिंहका रूप धार कर, मुंह फाड़ कर दहाड़ा जिससे हाथी डर कर भाग गया व बादशाह भी उस दैवी चमत्कारसे भयभीत हो

चवै—बोला। हड़ड़ंतू—भयंकर गर्जना करता हुआ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गया व कबीरसे क्षमा मांग कर उसको छोड़ दिया। इस प्रकार अपने भक्तका दुःख दूर करने वाले, कार्य सुधारने वाले व उद्धार करने वाले दयालु भगवानको धन्य है।

सैंभर मतमंदे, उसर वसंदे,
दोस करंदे, ना डरंदे।
गुरु दादू बंदे, तिस पुरहंदे,
छोड़ गयंदे, छकियंदे।
काळै पग बंदे, रहे तकंदे,
मुगलां हंदे मुरभ्रंतू।
धिन हो दुख वारण, काज सुधारण,
भगत उधारण भगवन तू।
जिय भगतां तारण भगवन तू। ६

अर्थ—सांभर नगरमें मूर्ख असुर (मुसलमान) वसते थे व उनका राजा भी था। वे लोग हिन्दुओंको कष्ट देते नहीं डरते थे। जब ईश्वरका भक्त गुरु दादूजी उस नगरमें गया तो उस पर अभिमानियोंने हाथी छोड़ा, परन्तु हाथीने दादूजीके पांव छू कर वन्दना की, मारा नहीं। यह चमत्कार देख कर वे मुगलोंके कर्मचारी चकित हो गए व बड़े लज्जित हुए। इस प्रकार अपने भक्तके दुःख दूर करने वाले, कार्य सुधारने वाले व उद्धार करने वाले दयालु भगवानको धन्य है।

· काळैसे तात्पर्य हाथीसे है, श्याम रंगके कारण संकेत है।

घट मधहेरे, नांमा घेरे,
कथा उचेरे दुजकेरे।
छींपे निज छेरे, प्रेम चखेरे,
आंसू भ्रेरे उण बेरे।
तब देवल फेरे, ये गुण तेरे,
पंडत घेरे पिछयंतू।

नांमा—नामदेव छींपा। घेरे—हटा दिया। छेरे—एक तरफ। पिछयंतू—पछताए।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

धिन हो दुख वारण, काज सुधारण,
भगत उधारण भगवन तू :
जिय भगतां तारण भगवन तू : १०

अर्थ–शूद्र समझ कर नांमदे छींपा को (जो ईश्वरका भक्त था) मन्दिरसे कथा पढ़नेके समय ब्राह्मणोंने दूर हटा दिया (क्योंकि शूद्रको कथा सुननेका व मन्दिरमें घुसनेका अधिकार तब नहीं था) तब उस नांमदेके, जो मन्दिरके पीछे खड़ा था, कथा सुननेके प्रेमके कारण आंसू आ गए। उस समय भगवानने मन्दिर फेर कर मुख छींपेकी तरफ कर दिया, ऐसे भक्तवत्सल हे भगवान तेरे गुण हैं। जिन ब्राह्मण पण्डितोंने उस छींपेको मन्दिरसे हटाया था वे सब पछताए और भक्त नामदेसे क्षमा मांगी व उसको मन्दिरमें ले गए व कथा सुननेसे कभी रोकटोक नहीं की। इस प्रकार अपने भक्तके दुःख दूर करने वाले, कार्य सुधारने वाले व उद्धार करने वाले दयालु भगवानको धन्य है।

मीरां गुण गाये, लाज गमाये,
विसै न भाये, विसराये।
महपतको पाये, जहर मंगाये,
प्यालौ लाये, भर पाये।
उण इमरत थाये, सुख उपजाये,
आंच न आये उदरं तू।
धिन हो दुख वारण, काज सुधारण,
भगत उधारण भगवन तू।
जिय भगतां तारण भगवन तू। ११

अर्थ–मीरांबाईने ईश्वरका भजन करना प्रारम्भ कर दिया, परदा छोड़ दिया, विषयभोगमें रुचि नहीं रही अपितु त्याग दिए, जिस पर राजा कुपित हुवा, विष मंगाया, प्याला लाए, विषसे भर कर प्याला मीरांको पिलाया तो वह अमृतके तुल्य मीठा हो गया जिससे मरना तो दूर रहा अपितु सुख उपजा, विषसे मीरांको पेटमें कोई कष्ट नहीं हुवा। इस प्रकार अपने भक्तका दुःख

लाज गमाये–परदा छोड़ा।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

दूर करने वाले, कार्य सुधारने वाले व उद्धार करने वाले दयालु भगवानको धन्य है।

कुरवंसी कर चाळौ, रच रोसाळां,
भीठ वडाळां, भोपाळां।
रिळिया रिणताळां, कट किरमाळां,
सीस भुजाळां सूंडाळां।
चालै रतखाळां, तेण विचाळां,
पंखणियाळां पोखंतू।
धिन हो दुख वारण, काज सुधारण,
भगत उधारण भगवन तू।
जिय भगतां तारण भगवन तू। १२

अर्थ–कौरवोंने उदंड किया, उन्होंने क्रोध किया, बड़े राजाओं का जैसा घोर संग्राम किया, तलवारोंसे योद्धाओंके शीश व हाथी कटे, जिससे उस घोर महाभारत युद्धके बीचमें रक्तके नाले चले। भगवानने पक्षियोंकी रक्षा करली अर्थात् टींटोळी जातिके पक्षिके बच्चों पर एक हाथीका वीरघंट कट कर ढकनेकी तरह पड़ गया जिससे उनकी रक्षा हो गई। इस प्रकार अपने भक्तके दुःख दूर करने वाले, कार्य सुधारने वाले व उद्धार करने वाले दयालु भगवानको धन्य है।

पड़ियौ फंद आये, जळ गज पाये,
गरकज थाये, गळळाये।
कस सूंड रहाये, ररो कहाये,
ढील न लाये, चढ़ धाये।
परहर पंखराये, चकर चलाये,
लियौ छुड़ाये लीजंतू।

भीठ–लड़ाई। रिळिया–मिले। रिणताळां–युद्धमें। किरमाळां–तलवारों। पंखणियाळां–पक्षियोंको अर्थात् टींटोळीके बच्चोंको। कस–कस मात्र, थोड़ी-सी। लीजंतू–लेने वाला, विपदासे छुड़ा कर बचाने वाला भगवान।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

धिन हो दुख वारण, काज सुधारण ,
भगत उधारण भगवन तू ।
जिय भगतां तारण भगवन तू । १३

अर्थ–जलमें हाथीके पांवमें फंद आकर पड़ा, जिससे वह (हाथी) डूब गया, व पानी पेटमें भरनेका गलगल शब्द हुवा अथवा घबराया। कस मात्र सूंड पानीके बाहर रही थी तब उसने विपदामें राम शब्द कहा (भगवानको पुकारा) तो केवल 'र' अक्षर ही कह सका कि तुरन्त ही भगवान गरुड़ पर चढ़ कर दौड़े, फिरभी शीघ्रताके कारण पक्षिराजको भी छोड़ा व सुदर्शन चक्र चलाया व ग्राहको मार कर हाथीको छुड़ा लिया अर्थात् बचा लिया। इस प्रकार अपने भक्तका दुःख दूर करने वाले, कार्य सुधारने वाले व उद्धार करने वाले दयालु भगवानको धन्य है।

वींटे मिरघांणूं, अति विघनांणूं,
बळ तू टांणूं, बीहांणूं।
सिमरे तिहं टांणूं, भील डसांणूं,
स्वांन हटांणूं, छुटबांणूं।
झळ फंद जळांणूं जळ वरसांणूं,
चहुं तरफांणूं, निहचंतूं।
धिन हो दुख वारण, काज सुधारण ,
भगत उधारण भगवन तूं।
जिय भगतां तारण भगवन तूं। १४

अर्थ–मृग घेरा गया, अनेक कष्टोंसे उसके शरीरका बल टूट गया क्योंकि वह डर गया था। उस विपदामें उसने हरिको याद किया अर्थात् पुकारा तो उसी क्षण शिकारी भीलको सांपने काटा, उस मरतेके हाथसे तीर छूटा जिससे कुत्ता मर गया, तीर कुत्तेकी हड्डी पर लगनेसे अग्नि उत्पन्न हुई जिससे हरिनको फांसनेका जालका फंदा था वह जल गया और अग्नि बढ़ती तो भी मृगकी हानि होती तो उसी समय भगवानने वृष्टि करके अग्निको भी बुझा दिया

वींटे–घेर लिया। **बीहांणूं**–डर गया। **टांणूं**–अवसर।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ग्रौर चारों तरफसे कष्ट मिटा कर उस मृगको चिन्तारहित कर दिया ग्रर्थात सुखी कर दिया। इस प्रकार ग्रपने भक्तका दुःख दूर करने वाले, कार्य सुधारने वाले व उद्धार करने वाले दयालु भगवानको धन्य है।

दसकंधर भ्राता, बुधके दाता,
वचन विधाता, कैवाता।
सौ नाह सुहाता, परजळ गाता,
उरले लाता, मुरझाता।
त्यां रहण न पाता, सरणै जाता,
दी लंक सिधाता देखंतू।
धिन हो दुख वारण, काज सुधारण,
भगत उधारण भगवन तू।
जिय भगतां तारण भगवन तू। १५

ग्रर्थ–रावणका भाई (विभीक्षण) बुद्धिमान तो ऐसा था कि दूसरोंको ज्ञान देता था ग्रौर सत्यपरायण ऐसा था कि बचनोंमें वह विधाता कहलाता था ग्रर्थात् उसके वाक्य विधाताके ग्रंक (लेख)के समान ग्रटल थे। वह भी रावणको नहीं सुहाता था। उस दुःखसे वह (विभीक्षण) मन ही मन जला करता था। ग्रन्तमें वह छातीमें रावणकी लात खा कर ग्रपमानसे लज्जित हो कर लंकामें नहीं रह सकनेके कारण श्रीरामचन्द्रकी शरणमें चला गया, जिन्होंने उस भक्तका इतना ग्रादर किया कि लंका-विजयके पूर्व ही उससे (विभीक्षणसे) मिलते ही 'ग्राव लंकेश' कह कर सम्बोधन कर दिया ग्रर्थात् उसको लंकाका पति मान लिया ग्रौर लंका-विजय करके ग्रयोध्याको प्रस्थान करते समय सब लोकोंके समक्ष ग्रपने वचनके ग्रनुसार विभीक्षणको लंकाका राज्य दे दिया। इस प्रकार ग्रपने भक्तका दुःख दूर करने वाले, कार्य सुधारने वाले व उद्धार करने वाले दयालु भगवानको धन्य है।

धू ध्यांन धरंदे, पच वरसंदे,
छोड चलंदे, राजंदे।

कैवाता–कहलाता था।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तब नृपत सुनंदे, चर पटयंदे,
सिर पदवंदे, नारंदे।
वन जाय वसंदे, आसन संदे,
रूप रसंदे, रांमरंतू।
धिन हो दुख वारण, काज सुधारण,
भगत उधारण भगवन तू।
जिय भगतां तारण भगवन तू। १६

अर्थ–ध्रुवने जब अपने पिता उत्तानपादका राज्य पानेके वास्ते भगवत-भजनका ध्यान किया (संकल्प किया) उस समय उसकी अवस्था पाँच वर्षकी थी। तपस्याके वास्ते राज्यकुलका सुख छोड़ कर चला। उसको पैदल जाते हुएको मार्गमें नारद मुनि मिले, तो उसने उनके चरणोंमें मस्तक रख कर प्रणाम किया, तब मुनिने उसको द्वादश मन्त्र दिया। ध्रुव बनमें जाकर आसन लगा कर वह मन्त्र जपनेके वास्ते तपस्यामें बैठ गया, भगवानके स्वरूपको ध्यानमें धर कर उसका आनन्द लेता हुआ। रामभजनमें लीन हो गया जिससे उसको इच्छित पद मिल गया। इस प्रकार अपने भक्तका दुःख दूर करने वाले, कार्य सुधारने वाले व उद्धार करने वाले दयालु भगवानको धन्य है।

ध्रुवको उसकी सौतेली माता सुरुचिने उसके पिता उत्तानपादकी गोदमें नहीं बैठने दिया था तब ध्रुवने उस अपमान पर उस पद, पिताके राज्यको प्राप्त करनेके लिये भगवानकी तपस्या की जिससे उसको पिताका राज्य व अविचल पद मिल गए।

चंपै सीचांणूं, मग असमांणूं,
पुळत न जांणूं, पंखांणूं।
तळ खंचे बांणूं, दुसटी पांणूं,
रटे नरांणूं, रखिमांणूं।
अह व्याध डसांणूं चूके बांणूं,
बध सीचांणूं बळसंतू।

चर–पैदल। पटयंदे–चलते हुएको। चंपै–डरा। सीचाणूं–बाज, स्वेन। तळ–वृक्षके नीचे (पृथ्वी पर)।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

धिन हो दुख वारण, काज सुधारण ,
भगत उधारण भगवन तू।
जिय भगतां तारण भगवन तू। १७

अर्थ–बाजसे (सेनसे) डर कर, जो आकाशमें ऊपर उड़ रहा था, पक्षि कपोतके वास्ते जो वृक्ष पर बैठा था, जानेका रास्ता नहीं था। नीचे भूमि पर दुष्टने हाथोंसे बांण खींच रखा था तब उस दीन व दुखित पक्षिने श्रीनारायणका रक्षाके हेतु स्मरण किया तो उस व्याधको सर्पने काटा जिससे बाण चूक कर बाज मारा गया। अतः पक्षिके बल हो गया अर्थात् मृत्युके भयसे व्याकुल था, बचनेका मार्ग नहीं था परन्तु जब भगवानने इस प्रकार उसको बचा दिया तब उसमें भगवानकी दया व शरणका बल आ गया। इस प्रकार अपने भक्तके दुःख दूर करने वाले, कार्य सुधारने वाले, व उद्धार करने वाले दयालु भगवानको धन्य है।

चंदर विभचारी, अैल्या नारी ,
खळता जारी पतखारी।
रिस साप सहारी, अधगत धारी ,
वरस हजारी, सिल भारी।
मग जात खरारी, दया विचारी ,
पद रज डारी उधरंतू।
धिन हो दुख वारण, काज सुधारण ,
भगत उधारण भगवन तू।
जिय भगतां तारण भगवन तू। १८

अर्थ–चन्द्रमा व्यभिचारीने अहिल्याका दुष्टतासे कपट करके सत् भंग किया अथवा वह बात ऋषिको बुरी लगी जिससे उसके पति गौतम ऋषिने अहिल्याको श्राप देकर मार डाला व पाषाण बना दिया जिससे उसकी (अहिल्याकी) अधोगति हुई। हजारों वर्ष तक वह पत्थरकी शिला होकर पड़ी रही, परन्तु रामचन्द्र महाराजने मार्ग जाते दया करके अपने पांवकी रज (रेत) उस

पतखारी–भुलावा देकर, छल कर अथवा पतिको। खारी–बुरी लगी।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शिला पर डाली जिससे वह जीवित हो गई, श्राप मिट कर उसका (अहिल्या का) उद्धार हो गया। इस प्रकार अपने भक्तके दुःख दूर करने वाले, कार्य सुधारने वाले व उद्धार करने वाले दयालु भगवानको धन्य है।

सय धन वरसारे, मूसलधारे,
तबै पुकारे, नरनारे।
परब्रत जब प्यारे, कर पर धारे,
नीर उतारे, चउं वारे।
सुरपत ग्यौ हारे, गरभज गारे,
बिरज उबारे, वरसंतू।
धिन हो दुख वारण, काज सुधारण,
भगत उधारण भगवन तू।
जिय भगतां तारण भगवन तू। १६

अर्थ–इन्द्रने कोप करके बृज पर सब बादल (१२ मेघमाला) मूसलाधार वरसाए, तब रक्षाके हेतु भगवानसे सब प्रजाने पुकारकी तो कृपालु श्रीकृष्णने गोवर्धन पर्वतको हाथ (अंगुली) पर उठा कर बृजवासियों पर छत्रके समान ओट करदी जिससे पानी लोगोंसे टल गया अतः सब बच गए व इन्द्र हार गया, उसका अभिमान मिट गया, बृज देश उस वर्षासे बच गया। इस प्रकार अपने भक्तका दुःख दूर करने वाले, कार्य सुधारने वाले व उद्धार करने वाले दयालु भगवानको धन्य है।

धिन धिन जिन दरिया, जग अवतरिया,
जस विसतरिया, अघ हरिया।
मुल्लां बरबरिया, घेखज करिया,
क्यूं भ्रम फिरिया, परहरिया।
अल्ला ऊचरिया, बांण अंतरिया,
साचो दरिया निजसंतू।

सय–सव। बरबरिया–बके, बखेड़ा किया। बांण–वाणी। अंतरिया–अन्तरिक्षमें, आकाशमें।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

धिन हौ दुख वारण, काज सुधारण ,
भगत उधारण भगवन तू ।
जिय भगतां तारण भगवन तू । २०

अर्थ—उस दरिया नामक पिंजाराको, जो रामस्नेही साधु हो गया था व ईश्वरका भक्त था, धन्य है । जिसने संसारमें जन्म लिया, जिसका यश सर्वत्र फैला, जिसके पाप मिट गए, जिसके वास्ते मुसलमान मुल्लाओंने बखेड़ा किया व क्रोध किया कि वह मुसलमानसे हिन्दू क्यों हुवा, इस्लाम धर्म क्यों छोड़ा, जिसका फैसला मस्जिदमें अल्लाहने (भगवानने) आकाशवाणी द्वारा किया कि दरिया सच्चा है, मेरा भक्त है । इस प्रकार अपने भक्तके कष्ट मिटाने वाले, कार्य सुधारने वाले व उद्धार करने वाले दयालु भगवानको धन्य है ।

मारवाड़के गांव रैणका पिंजारा दरियाशा हिन्दू साधु, रामस्नेही हो गया । उसके गुरुका नाम पेमदास था जो जातिके जाट थे । मुसलमानोंने बखेड़ा किया कि मुसलमानको हिन्दू क्यों किया गया व दरियाको कष्ट दिया तब दरियाने कहा कि मेड़ते (मसीत) मस्जिदमें चलो, वहां अल्लाहसे तुम व हम अर्ज करेंगे, वे जो फैसला कर देंगे वह सबको मानना पड़ेगा । निदान वैसा ही किया गया—बहुतसे मुसलमान व हिन्दू उस मस्जिदमें इकट्ठे हुए, मुसलमानोंने मिल कर फैसलेके लिए प्रार्थनाकी तो कोई आज्ञा नहीं हुई । फिर दरियाने प्रार्थनाकी के मैं हिन्दू हुआ हूँ, मुझको मुसलमान तंग करते हैं, आप न्याय करें कि मैं सच्चा हूँ कि मुसलमान लोग । तब आकाशवाणी हुई कि 'दरिया सच्चा है, हमारा भक्त है,' इस पर बखेड़ा मिट गया व दरियाका छुटकारा हुवा ।

हूं केतौ गासी, आवै हासी ,
सैंस फणासी, थक जासी ।
जुय-जुय जुग जासी, हुवोज गासी ,
तुरत विणासी, तौ पासी ।
अब आगे ध्यासी, तिण कज आसी ,
ढाल न लासी धावंतू ।

हूं—मैं । जुय जुय—ज्यां-ज्यां । तुरतविणासी—अल्पजीवी (मनुष्य) । ढील—देरी । हुवोज—निरन्तर, युग-युगमें, जन्म-जन्ममें । धावंतू—भजन करने वालेके वास्ते (भक्तके वास्ते) ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

धिन हौ दुख वारण, काज सुधारण,
भगत उधारण भगवन तू।
जिय भगतां तारण भगवन तू। २१

अर्थ—ब्रह्मदास साधु कहता है कि मैं एक तुच्छ प्राणी भगवतके गुण कितनेक गा सकता हूँ जब कि श्री शेशजी महाराज हजार मुखोंसे उसका गुण गाते थक जाते हैं, ओड़ नहीं आता। ज्यों ज्यों युग व्यतीत होते हैं जो अल्पजीवी भगवानके गुणगान करेंगे वे भगवानको पावेंगे। भविष्यमें भी जो भगवानको भजेंगे उनकी रक्षाके वास्ते भगवान आवेंगे, भक्तके वास्ते विलम्ब नहीं करेंगे। इस प्रकार अपने भक्तका दुःख दूर करने वाले, कार्य सुधारने वाले व उद्धार करने वाले दयालु भगवानको धन्य है।

कळसरो कवित्त

है मुख जेण हजार, जास दुगणी मुख जीहा।
जीह जीह जस जाप, इधक इधक नित ईहा॥
अखंड धार इकसार, सुतौ रणकार सुहायौ।
तूझ गुणौं किरतार, पार किणी नह पायौ॥
अनुसार कछु बुध आपणी, ब्रह्मदास कहिया वरण।
अरदास तास मानो इती, सुख निवास राखौ सरण॥

अर्थ—जिसके हजार मुख हैं, उनसे द्विगुणित जीभें हैं, प्रत्येक जीभसे भगवानका गुण-गान करते हैं, सर्पके (शेशजीके) निरन्तर राम शब्द रटते रहनेसे उनके मुखसे ररंकार शब्द शोभायमान होता है। हे करतार, आपके गुणोंका पार किसीने नहीं पाया। मेरी बुद्धिके अनुसार मैंने (ब्रह्मदासने) यह वर्णन किया है सो हे सुखके निवास भगवान, मुझको अपनी शरणमें रखना।

कळसरो कवित्त—काव्यको सम्पूर्ण करके अन्तमें जो कवित्त कहा जाता है। (मानो मंदिर पर कळस [अंडा] चढ़ाया गया है)। **ईहा**—इच्छा। **अरदास**—अर्जदास्त, प्रार्थना।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

* श्री *

ब्रह्मदासजी कृत

भगतमाल

त्रतीय

दूहौ–वंदन श्री गुरुदेवकूं, दीनौ सुख दरियाव।
उनहीकौ ले आसरौ, परम नांम परभाव॥ १

अर्थ–श्री गुरुदेवको नमस्कार करता हूँ जिन्होंने मुझको ईश्वर भजन रूपी सुखका समुद्र दिया, उन्हींकी शरण लेकर मैं परमात्माके परम नामके प्रभावका वर्णन करता हूँ।

दूहौ–सुणजौ नांम प्रभाव सह, चंचळ मिट चिंत्याह।
धू बाळापै धावियौ, बैठौ गोद पिताह॥ २

अर्थ–सब लोग ईश्वरके नामका (रामका) प्रभाव सुनना जिससे मनकी सर्व प्रकारकी चिन्ता मिट जाती है, जैसे ध्रुवने बाल्यावस्थामें ही उसको (भगवानको) ध्याया (राम नाम भजा) और पिताकी गोदमें बैठनेका मनवाञ्छित पद पाया।

छन्द भुजंगीप्रियात

पिता गोद हूंता सदा धूह पालै,
चवै मात ग्यांनी विना वेस चालै।
पढ़ै मूळ मंत्रं अखै राज पांमूं,
निमौ रांम नांमूं, निमौ रांम नांमूं। १

अर्थ–पिताकी (राजा उत्तानपादकी) गोदमें बैठते हुए ध्रुवको उसकी सौतेली माता सुरुचिने मना किया तब उसने (ध्रुवने) अपनी माता सुनीतिसे पिताका स्थान पानेका मार्ग पूछा तो माताने उसको ईश्वर (राम) भजनका मार्ग

पालै–मना करे, विरोध करे। वेस–आयु। पांमूं–पाऊं।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बताया और कहा कि भगवत-उपासनामें बालक व वृद्धका अर्थात् आयुका प्रश्न नहीं होता । हर समय हर व्यक्ति यदि दृढ़ संकल्प हो तो ईश्वरोपासना कर सकता है । तब ध्रुवने अपने ध्येयकी सफलताके वास्ते मूल मंत्र (द्वादश मंत्र) जपना प्रारम्भ कर दिया जिससे उसको अविचल पद व राज्य मिल गए । अतः उस राम नामको वारंवार नमस्कार है ।

घणौ द्रोह कीधौ प्रह्लादघाती ,
रयौ त्रास देतौ जिकौ दीहराती ।
लगी नांहि तांणूं एकौ उलांमं ,
निमौ रांम नांमं, निमौ रांम नांमं । २

अर्थ–हरिणाकुशने अपने पुत्र भक्त प्रह्लादको मारनेके वास्ते बहुत शत्रुताकी व रात दिन उसको कष्ट देता रहा परन्तु (उस राम नाम भजने वाले) भक्त प्रह्लादको वास्तवमें कोई दुःख नहीं हुआ । अतः इस राम नामको वारंवार नमस्कार है ।

शत्रु ग्राह ग्रासी, गयौ डूब सारा ,
रती मात हाथी, रही सूंड बारा ।
कयौ तेथ आधौ, भयौ सिध कांमं ,
निमौ रांम नांमं, निमौ रांम नांमं । ३

अर्थ–हाथीको जब उसके शत्रु मच्छने गण्डकी नदीमें पकड़ा और जब वह सब प्रकारसे डूब गया अर्थात् सब शरीर पानीमें डूब गया और केवल सूंड थोड़ीसी (रत्ती मात्र) बाहर रह गई, जिससे उसने रामका शब्द आधा ही कहा अर्थात् 'र' ही कह सका तो भक्तके दयालु भगवानने उसी समय उसका मनोरथ सफल कर दिया अर्थात् ग्राहको मार कर हाथीको बचा दिया । अतः इस राम नामको वारंवार नमस्कार है ।

भड़ां पाज बांधी, तिका वात भाखां ,
लिख्या अंक दोही, गिरां सीस लाखां ।

तांणूं–कष्ट, आंच । उलामूं–दुष्ट । ग्रासी–पकड़ा । बारा–बाहिर ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तिरे पत्र ज्यूंही, धरै मध्य तांमं ,
निमौ रांम नांमूं, निमौ रांम नांमं । ४

अर्थ–श्री रामचन्द्रने जब लंका पर चढ़ाई की तब उसके योद्धाओंने समुद्र पर सेतु बांधा, पत्थरों पर केवल दो ही अक्षर (राम) लिख कर समुद्रमें डाले तो उस नामके प्रभावसे वे सब पत्थर पत्रके समान तैरने लग गए जिससे पुल बंध गया। अतः इस राम नामको वारंवार नमस्कार है।

रिदै मांय वेस्या, सुतौ नांम राखी ,
भिणै रांम सूवा, सदा एम भाखी ।
ठिले पाप सारा, मिळे मोख ठांमं ,
निमौ रांम नांमूं, निमौ रांम नांमं । ५

अर्थ–जातिकी तो पतित व वेश्याका काम करने वाली थी तो भी भगवानने उसके उन कर्मोंकी ओर नहीं देखा क्योंकि वह अपने तोतेको राम शब्द पढ़ाती हुई सदा रामका नाम लेती। अतः मरते समय उसने स्वभावतः राम शब्द उच्चारा तो उसके सब पाप दूर हो गए और उसको मोक्ष पद मिल गया। अतः इस राम शब्दको वारंवार नमस्कार है।

अजामेळ जैसौ, महा अपराधी ,
लियौ वार हेकौ तिकै गंत लाधी ।
हियै पुत्र बोलाड़वा तेण हांमं ,
निमौ रांम नांमूं, निमौ रांम नांमं । ६

अर्थ–पुण्डरपुरमें अजामिल बड़ा पापी ब्राह्मण था, परन्तु उसने अन्तकालमें नारायण शब्द एक ही वार उच्चारा तो उसकी गति हो गई, यद्यपि उसने तो अपने नारायण नामक पुत्रको पुकारा था। अतः इस राम नामको वारंवार नमस्कार है।

खरादेस मग्गा, नहीं भूठ जामें ,
पड़ै तेथ प्रांणी, खरा जूंण पामें ।

तांमूं–तिसमें अर्थात समुद्रमें। **भिणै**–पढ़ो। **ठिले**–हट गए, दूर हो गए। **जूंण**–योनी। **तेथ**–तहां। **पामें**–प्राप्त करता है।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गयौ तेथ कब्बीर सेदेह धांमं,
निमौ रांम नांमूं, निमौ रांम नांमं। ७

अर्थ–यह सत्य है कि देश तो मग्गा (मगह) था जहां पर मृत्यु होनेसे प्राणीको गधेका तन मिलता है परन्तु उसके विपरीत (राम शब्द भजने वाला) भक्त कबीर उस अधम स्थानमें मरने पर भी देह सहित स्वर्ग गया। अतः इस राम नामको वारंवार नमस्कार है।

मग्गा—काशीसे कुछ दूर गंगा पार मगह नाम भूमि है जहां पर मरने वालेको गधेकी योनि मिलती है। कबीर वहां मरा, हिन्दुओंने जलाना चाहा, मुसलमानोंने गाड़ना चाहा, विवाद बढ़ा, तब शवके ऊपरका कपड़ा हटा कर देखा तो शवके स्थान पर सुगन्धवान फूल मिले जिन्हें हिन्दुओंने लेकर तो समाधि बनाई व मुसलमानोंने लेकर कबर बनाई जो वहां पर अद्यावधि विद्यमान है।

दुजां हाथ मारै, पिता मात द्रोही,
लिये दांम किन्या, जियै जीव लोही।
धणी बाळघाती, लियै सिद्ध धांमं,
निमौ रांम नांमूं, निमौ रांम नांमं। ८

अर्थ–ब्रह्म-हत्या करने वाला, माता-पिताका शत्रु, सम्बन्धके (सगपणके) समय वर पक्षसे कन्याके रुपये लेने वाला, दूसरे प्राणियोंको कष्ट देने वाला अथवा प्राणोको मार कर मांस खाने वाला, अपने स्वामी व बालकको मारने वाला पापी भी राम नाम भजनेसे पापोंसे मुक्त होकर अन्तमें परम पदको प्राप्त होता है। अतः इस राम नामको वारंवार नमस्कार है।

दूहौ–नांम महातम वरण कर, हमकूं किये निहाल।
सुणियौ गुरु हरनाथसूं, दादू दीनदयाल॥ २

अर्थ–राम नामका महात्म्य वर्णन करके मुझको निहाल कर दिया व यह महात्म्य मैंने मेरे गुरु हरनाथसे सुना था जो दादू दीनदयालजीके अनुयायी साधु थे। दीनों पर दया करते थे अथवा मुझ दीन पर उनकी दया थी।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दूहौ–मेरे मन निस दिन महा, वसै आस विसवास।
ब्रह्मदास भगवत भजै, जनम मुगत हुय जास ॥ १

अर्थ–ब्रह्मदास कहता है कि मेरे मनमें रात-दिन यह दृढ़ विश्वास व पूर्ण आशा है कि जो कोई श्री भगवानको भजता है उसकी मुक्ति हो जाती है और फिर आवागमनमें नहीं आता।

++++++++++

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

* श्री *

ब्रह्मदासजी कृत

भ ग त मा ल़

चतुर्थ

गीत जात चितइलोळ (चित्तलोळ)

प्रसण हुय प्रहळाद ऊपर,
हर दिखाये हत्थ :
पाड़ सब्बळ दैत्य पाड़्यौ,
करण अदभुत कत्थ ।
तौ समरत्थ जी समरत्थ,
सारी वात हर समरत्थ । १

अर्थ—ईश्वरने अपने भक्त प्रह्लाद पर प्रसन्न होकर स्वयंने प्रकट होकर युद्ध किया और संसारमें अद्‌भुत वार्ता करनेके वास्ते महापराक्रमी दैत्य हरिणाकुशको मारा। अतः यह स्पष्ट है कि हरि सर्वसमर्थ है अर्थात् उसके वास्ते कोई बात असम्भव नहीं है।

बाळ ध्रू वन जाय बैठौ,
करण सेवस कांम ।
देख अपणी ओट लीनौ,
धणी अवचळ धांम ।
तौ निध नांम जी निध नांम,
जगमें व्यापियौ निध नांम । २

अर्थ—बालक ध्रुव अपना मनोरथ सिद्ध करनेके वास्ते (पिताके राज्य प्राप्तिके

धणी—स्वामी, सबका स्वामी, ईश्वर ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वास्ते) वनमें जाकर ईश्वरोपासनामें बैठ गया। उसकी दृढ़ भक्ति देख कर ईश्वरने उसको अपनी शरणमें ले लिया और उसी स्वामीने उसको (ध्रुवको) अविचल स्थान दे दिया, इसी वास्ते भगवानका नाम निघ है और वेदोंमें भी इसका नाम निघ गाया गया है अर्थात् किसी की बुद्धिमें नहीं आ सकता। कोई देहधारी उसको यथार्थ जान नहीं सकता।

अगन भाळा बीच आये,
और नहीं अेलाज।
स्रियादे वड देव सिमर्यौ,
करण अपणौ काज।
तौ महाराज जी महाराज,
मिनिया राखिया महाराज। ३

अर्थ–बिल्लीके बच्चे जब निवाईकी ज्वालामें आ गए थे और जब दूसरा उपाय उनके बचानेका नहीं रहा तब स्रियादे भक्त कुम्भारीने उनको बचानेके वास्ते भगवानका स्मरण किया, जो वास्तवमें सर्वरक्षक व दयालु है। अतः उसने उन बच्चोंको बचा लिया।

ग्राह पकड़े खांच गाढ़ौ,
सलल फिरगौ सीस।
तज गरुड़ गजराज तारे,
वात विसवा वीस।
तौ जगदीस जी जगदीस,
जन कज दौड़णा जगदीस। ४

अर्थ–ग्राहने हाथीको गाढ़ा पकड़ कर पानीमें खींच कर डुबा दिया था परन्तु उसके पुकारने पर उसको बचानेके वास्ते भगवानने शीघ्रताके कारण गरुड़की सवारी छोड़ कर स्वयंने जाकर भक्त गजराजको छुड़ाया, यह सर्वथा सत्य है। अतः यह स्पष्ट है कि भगवान ऐसे दयालु हैं कि अपने भक्तके वास्ते दौड़ कर सहायता करते हैं।

अेलाज–इलाज, उपाय। **वड देव**–बड़ा देव, भगवान। **सलल**–सलिल, पानी।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अहल्या पद रेण उधरी ,
कियौ निरभै कीर ।
विभीखणकूं लंक बगसी ,
साथ राखण सीर ।
तौ रघुवीर जी रघुवीर ,
राखण नांमका रघुवीर । ५

अर्थ–श्रीभगवान रामचन्द्रने अहिल्याका, जो ऋषिके श्रापसे पत्थरकी शिला हो गई थी—अपने चरणोंकी रज छुआ कर उद्धार किया था अर्थात् जीवित कर दी थी, व नरबदासे पार उतारने वाले कीरको भी उसकी इच्छानुसार मोक्ष दे कर पुनः जन्मके भयसे निवृत्त कर दिया व विभीक्षणको लंकाका राज्य दिया। इस अभिप्राय व कृपासे कि भूमिपति हो जानेसे वह उनका (रामचन्द्रका) सर्वदा भागीदार बना रहे क्योंकि वे भी तो राजा थे अथवा सर्वदा संबंध बना रखनेके हेतु उसको राज्य देकर सम्पत्तिवान कर दिया। अतः यह स्पष्ट है कि भगवान रघुनाथजी अपने भक्तका नाम (यश) संसारमें रख देते हैं।

भीलड़ी चुग किया भेळा ,
बौ'त हितसूं बोर ।
प्रीत कर रघुनाथ पाया ,
कोय'क खांडी कोर ।
तौ किसोर जी किसोर ,
किरपा करणहार किसोर । ६

अर्थ–अछूत जातिकी भीलड़ीने (शबरीने) अति प्रेमभावसे चख-चख कर मीठे बेर बीन कर इकट्ठे किए थे, वे स्वयं भगवान रामचन्द्रने प्रीतिके साथ खा लिये थे यद्यपि भीलड़ीके चख लेनेके कारण हरेक बेर खण्डित था। अतः यह स्पष्ट है कि भगवान तो बिना भेदभावके सब भक्तों पर समान कृपा करने वाले हैं।

रेण–रज, धूल । नांमका–कीर्ति, यश । कोर–किनारा ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पेख दास कबीर पड़िया ,
सांकड़े निज संत ।
बार ढाळी आंण बाळध ,
जेथ उधरे जंत ।
तौ भगवंत जी भगवंत ,
भगतां वाहरू भगवंत । ७

अर्थ–अपने भक्त कबीरको संकटमें पड़ा देख कर उसका कष्ट मिटानेके हेतु भगवानने उसके (कबीरके) घरके अगाड़ी बैलों पर लदी हुई अनाजकी भरी हुई बोरियां लाकर उतार दी जिनके द्वारा हजारों भूखे मनुष्योंका उद्धार हुआ अर्थात् भोजन मिला। यह काशीका वृत्तान्त है जहां पर मरने वाला मोक्ष पाता है। अतः यह स्पष्ट है कि भगवान भक्तोंकी विपदामें सहायता करते हैं।

काशीमें जुलाहे कबीरको ईश्वरका भक्त देख कर ब्राह्मण लोग उससे द्वेष रखते थे। कबीरका अपमान करानेके हेतु ब्राह्मणोंने काशी नगरीके व पड़ोसके भिक्षुओंको कहला दिया कि कल कबीरके घर पर अनाज बांटा जायगा, सब आना। कबीरको पता नहीं था, हजारों भिक्षुक एकत्रित हो गए, कबीर घबरा कर, बाहर चला गया। पीछेसे स्वयं भगवान अनाजसे भरी पोटें लाए, सब भिक्षुओंको अनाज दे दिया, कबीरकी शोभा हो गई, ब्राह्मण लज्जित हुए।

नरसलाकूं जांण निरधन ,
कोण हासी कीन ।
होय सांवळसाह हुंडी ,
द्वारका भर दीन ।
तौ आधीन जी आधीन ,
ईस्वर सेवगां आधीन । ८

सांकड़े–संकटमें। ढ़ाळी–डाली, खोली। जेथ–जहां। जंत–जन्तु, प्राणी। नरसला–नरसी भक्त। कोण–किसीने।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अर्थ–नरसी मेहताको निर्धन जान कर किसीने हुँडी लिखाने वाले सन्तोंसे उसकी हुँडी चलनेकी हँसी की और जब नरसी भक्तने उस ताने पर भगवानके भरोसे अपना अपमान बचानेके वास्ते सांवलशाहके (कृष्णके) नाम हुँडी द्वारकाको लिख दी और जब वे सन्त रु० ७००)की हुँडी लेकर द्वारका पहुँचे तो वहां पर भगवानने सांवलशाह नामक महाजन बन कर हुँडो लेकर रुपये चुका दिए। अतः यह स्पष्ट है कि भगवान अपने भक्तके आधीन हैं।

छदांमाके तंडल सारे,
पावतां कर प्यार।
किसन सौव्रन पुरी कीनी,
साख भर संसार।
तौ दातार जी दातार,
दाळद भांजणौ दातार। ६

अर्थ–मित्र सुदामाके चांवल शोध कर (उसकी कांखमेंसे) लिए व प्रेमसे खा गए, इसी वास्ते श्रीकृष्णने सुदामाके वास्ते स्वर्णकी पुरी (सुदामापुरी) रची व उसको दे दी जिससे उसकी (सुदामाकी) निर्धनता दूर हो गई और इसको सब लोक जानते हैं। अतः यह स्पष्ट है कि भगवान बड़े दानी हैं और सर्वदाके वास्ते दरिद्र मिटाने वाले दाता हैं।

छांन छींपै तणी छाई,
मगन होय मुरार।
देवरौ उलटाय दीनौ,
सरब कारज सार।
बलिहार जी बलिहार,
व्रजचंद पतपाळकौ बलिहार। १०

अर्थ–भगवानने नामदेव छींपेकी भक्ति पर मग्न होकर स्वयंने उसकी छांन (मजदूरका वेष धर कर, कष्ट पाकर) छाई और उसी छींपेको अछूत समझ

सारे–शोधे, संभाल कर।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कर लोगोंने पण्डरपुरमें मन्दिरके सम्मुख नहीं आने दिया था, पीछेकी तरफ हटा दिया था तब भगवानने उस मन्दिरको फेर कर उसका द्वार उस नामदेव भक्तकी तरफ कर दिया था और उमके सर्व कार्य सफल किये (मन्दिरमें कथा सुनना इत्यादि) । अतः अपने भक्तकी प्रतिज्ञा व सम्मान पालने वाले भगवानकी बलिहारी है ।

द्रौपदीकी बेर दीठी,
मेट सब्ब मरोड़ ।
खांच थाकौ चीरकूं खळ,
आवियौ नह ओड़ ।
तौ रिणछोड़ जी रिणछोड़,
राखण लाज हर रिणछोड़ । ११

अर्थ–द्रोपदीके चीर हरणके समय सब लोगोंके समक्ष दुर्योधनका अभिमान मिटा दिया, क्योंकि उसकी आज्ञासे सभामें द्रोपदीका अनादर करनेके वास्ते उसके शरीर परसे चीर उतारनेके हेतु दुःशासनने चीर खींचा था परन्तु भगवानकी कृपासे वह चीर बढ़ता गया, उसका ओड़ नहीं आया, जिससे अन्तमें वे दुष्ट लोग (दुर्योधन आदि कौरव) हार गए व सती द्रोपदीकी लज्जा रह गई । अतः यह स्पष्ट है कि यह रिणछोड़राय (कृष्ण) अपने भक्तकी लज्जा रखने वाला है ।

कहा सेवा करी करमां,
भलौ आयौ भाय ।
धाबळैरौ धार पड़दौ,
खीचड़ौ ग्या खाय ।
तौ हररांम जी हररांम,
है नित प्रीत वस हररांम । १२

ओड़–अन्त । भाय–भाव । धावळै–उनकी ओढ़नी । खीचड़ौ–बाजरीको भिगो कर ऊखलमें कूटते हैं जिससे दानोंके टुकड़े हो जाते हैं, फिर वह पानी डाल कर पकाया जाता है जो खिचड़ा कहलाता है । यह दीनोंका भोजन है । भगवानको जब भोग लगाया जाता है तब परदा किया जाता है इसीलिए करमांने खीचड़ी खिलाई तब धावळीका परदा भगवानके किया था ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अर्थ–करमां नामक जाटणीने भगवानकी किस प्रकारकी सेवा की थी जो समझमें नहीं आती क्योंकि उसकी भक्ति पर वे इतने प्रसन्न हो गए थे कि उसके ओढ़नेको मैली धाबलीका परदा करके उसके घर पर जाकर खीचड़ा (दीनोंका भोजन) खा गए। अतः यह स्पष्ट है कि भगवान अपने भक्तकी सच्ची प्रीतिके कारण सदा उसके आधीन हैं।

कहर सुरपत कोप कीनौ,
सात दिन असराळ।
नीर वूठौ हुवौ नेक न,
बिरज वंकौ वाळ।
तौ गोपाळ जी गोपाळ,
गिरवर धारियौ गोपाळ। १३

अर्थ–इन्द्रने ब्रज देश पर बहुत कोप करके उसको नाश करनेके हेतु सात दिन तक लगातार मूसलाधार वृष्टि की परन्तु उसका (ब्रजका) बाल भी बांका नहीं हुवा, कारण भगवान गोपाल कहलाते हैं, अतः उन्होंने अपनी अंगुली पर गोवर्धन पर्वतको उठा कर अपने भक्त व आश्रित गोप, गोपिकायें व गौवों आदि सब ब्रजवासियों व पशुओंको उस पर्वतकी ओटमें बचा लिया व इन्द्रका अभिमान मिटा दिया।

संत दादूदास सेती,
मुगळ मतके मंद।
दूठ हाथी छोड़ दीनौ,
रयौ सैंभर रद्द।
तौं गोविंद जी गोविंद,
गैवर टाळियौ गोविंद। १४

अर्थ–सांभर नगरमें मूर्ख मुगल नवाबने दादूजी महाराजको मारनेके वास्ते दुष्ट हाथी (मनुष्योंको मारने वाला हाथी) छोड़ दिया था, परन्तु उसका वह

असराळ–लगातार, मूसलाधार। **दूठ**–दुष्ट, मस्त। **गैवर**–हाथी।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.		Jin Gun Aaradhak Trust

दुष्कृत्य विफल रहा क्योंकि हाथीने उनको नहीं मारा अपितु दादूजीके चरण छू कर हट गया। अतः यह स्पष्ट है कि भगवानने अपने प्रिय भक्त दादूसे उस हाथीको हटाया व भक्तकी रक्षा की।

करण अपणौ नेम कूड़ौ,
रचांणौ भारात ।
हेत भीसम चकर ग्रहियौ,
हुवौ ऊंचौ हाथ।
तौ जगनाथ जी जगनाथ,
जन पण पाळण जगनाथ। १५

अर्थ—ईश्वर अपने भक्तके प्रणका इतना विचार रखता है कि उसको पूर्ण करनेके वास्ते स्वयंका प्रण भी तोड़ देता है महाभारतमें श्रीकृष्णने हाथमें शस्त्र न पकड़नेका प्रण किया था, उसके विपरीत भीष्मपितामहने यह प्रण लिया था कि वह श्रीकृष्णको शस्त्र पकड़वा कर ही युद्ध त्यागेगा और वास्तवमें हुआ भी यही—क्योंकि युद्धके समय जब भीष्मने बांणोंकी ऐसी वृष्टि की कि अर्जुन वगैरह पांडव जोखममें पड़ गए थे तब भगवान श्रीकृष्णने अपना प्रण तो झूठा कर दिया और रथका पहिया हाथमें लेकर फिरा कर भीष्मके बांणोंसे पांडवोंकी रक्षाकी अर्थात् शस्त्र हाथमें ले लिया। अपने भक्त भीष्मके प्रणको पूरा किया जिससे भीष्मने युद्ध करना त्याग दिया, क्योंकि भीष्मकी विजय हो गई थी। अतः यह सिद्ध है कि श्री भगवान अपने भक्तका प्रण पालते हैं।

मेड़त्यां कुळ मुरधरा मझ,
अधपत्यां आधार ।
मगन मूरत मांहि निरतन,
लई मीरां लार।
तौ रिझवार जी रिझवार,
भगवत गावतां रिझवार। १६

नेम—नियम, प्रण।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अर्थ–राठौड़ मेड़तियोंके कुलमें, भक्ति व तपोबलके कारण क्षत्रिय राजाओंका मानो वह मीरांबाई आधाररूप थी। अन्तमें श्री भगवानके मन्दिरमें मूर्तिके सामने भक्तिमें मग्न नृत्य करती-करती मूर्तिमें लय हो गई थी। अतः यह सिद्ध है कि श्री भगवान अपने पूर्ण भक्त पर अत्यन्त ही प्रसन्न होते हैं।

सेन लागौ संत सेवा,
भाव धर उर भूर।
रूप धर कर सेनकौ हरि,
करी दुविधा दूर।
तौ भरपूर जी भरपूर,
भगवत भावसूं भरपूर। १७

अर्थ–जब सेन भक्त भक्ति-भावमें मग्न होकर साधु सेवामें लग गया, तब उसका भेष धर कर श्री भगवान राजाकी सेवा कर आए जिससे सेनकी चिन्ता मिट गई। अतः यह सिद्ध है कि श्री भगवान पूर्ण भाव रखने वाले पर प्रसन्न हैं।

सीसोद्यां सिरताज नृपसूं,
करी चुगली काय।
भवन खांडौ काठकौ कर,
लाखकौ तन खाय।
तौ हरिराय जी हरिराय,
पलटयौ खड्ग तत हरिराय। १८

अर्थ–चित्तौड़के महाराणासे किसीने चुगली की कि उनका भवानीसिंह (भवना) नामक चहुवाण सरदार म्यानमें लकड़ीको तलवार रखता है, परन्तु जब महाराणाने वह लकड़ीकी तलवार म्यानसे निकाली तो वह फौलाद-सी, बिजली-सी तेज निकली जिससे लाखों आदमी मारे जा सकते थे। भवना ईश्वरका भक्त था, दयासे लकड़ीकी तलवार रखता था, भगवानने उसका

तत–तुरन्त।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मान रखा । अतः यह सिद्ध है कि श्री भगवानने अपने भक्तका मान व वचन रखनेके वास्ते लकड़ीकी तलवारको पलट कर लोहेकी कर दी।

संत दादू ब्रह्म आदू,
महा निरपख चाल ।
दुस्टतासं॒ वैर कीनौ,
मुवौ हुय वेहाल ।
तौ हरिलाल जी हरिलाल,
है नित भक्ति पख हरिलाल । १६

अर्थ—सांभर शहरके काजीने दादूजीके कोड़े लगाए थे तब महाराज बोले—मेरा शरीर कठोर है, तेरे हाथ दुखेंगे। परिणाम यह हुआ कि उस ईश्वर-भक्तके वचन छूटते ही काजीके हाथोंमें पीड़ा हो गई और तीन महिने उसी पीड़ासे कष्ट भुगत कर वह दुष्ट मर गया। उसने विना कारण ईश्वर-भक्तसे वैर किया। यह प्रमाण है कि उस समय मुसलमान अफसर हिन्दू साधुओंको इस प्रकार कष्ट देते थे। अतः यह सिद्ध है कि श्री भगवान नित्य अपनी भक्ति रखने वालेको सहायता करता है।

कहा गिनका वेद पढ़ियौ,
जातकी कुलहीन ।
सूवटा कौ प्यार करतां,
मुक्त मारग लीन ।
तौ आधीन जी आधीन,
ईस्वर सेवगां आधीन । २०

अर्थ—वेश्याने कौनसा वेद पढ़ा था अर्थात् नहीं पढ़ा था। वह तो पतित जाति व कुलकी स्त्री थी परन्तु वह नित्य अपने पाले हुए एक तोतेको प्रेमसे राम-राम शब्द पढ़ाती और जब वह मरने लगी तो उसके मुखमें से वही राम-राम शब्द तोतेके प्रेमसे निकला तो उस नामके प्रतापसे उस अधमकी भी मुक्ति हो गई। अतः यह सिद्ध है कि श्री भगवान अपने सेवकोंके आधीन हैं।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बोर पाया वेद गाया,
चाख बांध्या चीर।
प्रेमसं इधकार कीनौ,
बैठ सुलता तीर।
तौ रघुवीर जी रघुवीर,
राखण नांम हर रघुवीर। २१

अर्थ–जिस भगवानकी वेद महिमा गाते हैं उन्होंने भीलड़ीके बेर खाए, जो उसने चख-चख कर अपनी मैली साड़ीके पल्लेमें बांध रखे थे। उसका भगवानने (रामचन्द्रने) प्रेमसे सुलता नदीके तीर पर सम्मान किया था। अतः यह सिद्ध है कि ईश्वर सबका स्वामी है, उसके कोई भेदभाव नहीं है, वह तो भक्ति देखता है अथवा पूर्ण भक्तिके कारण अपने तुच्छ भक्तका भी संसारमें नाम (यश) रख देता है।

धनै धीरज धार मनमें,
कियौ हरिसूं काज।
बिना वायां नीपजायौ,
हुवौ बहतौ नाज।
तौ सिरताज जी सिरताज,
संतां सीस पर सिरताज। २१

अर्थ–भक्त धने जाटने मनमें धैर्य धर ईश्वर निमित्त अपने खेतमें बोनेका बीज (अनाज) सन्तोंको दे दिया था तो श्री भगवानने कृपा करके बीज बोए वगैर ही उसके खेतमें वहुत-सा अनाज निपजा दिया था। अतः यह सिद्ध है कि भक्तोंकी रक्षा करने हेतु ईश्वर सदैव सर्वोपरि है अथवा अपने भक्तोंका सदैव रक्षक है।

दास मीरां साच प्रगट्यौ,
उदै भये अंकूर।

इधकार–सम्मान, स्वीकार। वायां–वोए। बहतौ–वहुतसा। सिरताज–सर्वोपरि, रक्षक। साच–सद्ज्ञान।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जहर प्याला अमी जरिया,
प्रगट पीना पूर।
तौ हजूर जी हजूर,
हाजर भगत हेत हजूर। २३

अर्थ–भक्त मीरांके हृदयमें सद्ज्ञानका प्रकाश हुआ और भक्तिके अंकुर उत्पन्न हुए अर्थात् वह ईश्वरोपासनामें लगी, इस पर उसको विषका प्याला दिया गया तो वह अमृत होकर उसको हजम हो गया, कोई हानि नहीं हुई यद्यपि उसने वह पूरा प्याला पी लिया था। इससे यह सिद्ध है कि ईश्वर अपने भक्तको बचानेके वास्ते हर समय विद्यमान है अर्थात् भक्तकी रक्षा वह हर समय करता है।

सिख दरिया प्रेम सतगुर,
दयण रसोई द्वार।
सिरांणे गा मेल सूतां,
हूंडी सिरजणहार।
तौ किरतार जी किरतार,
कारज सारिया किरतार। २४

अर्थ–मारवाड़ मेड़तेके गांव रैणका पिंजारा दरियाशा मुसलमान रामस्नेही साधु हुआ। वह ईश्वरका भक्त था। उसके गुरु पेमदासजी रामस्नेही साधु थे। उन गुरुजीको रसोई देनी थी। परन्तु दरिया निर्धन था, और चिन्तामें था। रातको वह सोया हुआ था, तब भगवानने हुंडी लिख कर उसके तकियेके नीचे रख दी जिसके द्वारा रुपये लेकर दरियाने गुरुको रसोई दी (भोज्य दिया)। इससे स्पष्ट है कि भगवानने अपने भक्तके कार्य सफल किए।

अमी–अमृत। **जरिया**–पच गया। **सिख**–शिष्य। **दयण**–देनेके वास्ते। **द्वार**–खिड़की अर्थात् घर। **सिरांणे**–सिराना, पलंग या विस्तरेका वह भाग जिस तरफ सर रहता है। **सिरजणहार**–जन्मदाता, ईश्वर। **सारिया**–पूरे किए, सफल किए।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ब्रह्मदास माहेस ब्रह्मा,
धरत निस दिन ध्यांन।
देख संकट ऊठ दौरे,
देरा निरभै दांन।
तौ भगवांन जी भगवांन,
भगतां तारणौ भगवांन। २५

अर्थ–ब्रह्मदास कहता है कि जिनका ध्यान रात दिन शिव व ब्रह्मा धरते हैं वह परमात्मा इतना बड़ा व गहन होने पर भी अपने भक्तका भय व कष्ट मिटानेके हेतु तुरन्त उठ कर दौड़ता हुआ आता है। अतः यह स्पष्ट है कि भगवान अपने भक्तोंको तारने वाले हैं।

निरभै–अभय।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

* श्री *

ब्रह्मदासजी कृत

भगतमाल

पंचम्

निसांणी

वंदूं चरण गुरुदेवके, निज बुध अनुसारे।
गाऊं हूं गुण जगपती, तंतसार तुमारे।
जनम जनमके करम, जे हुय खीण हमारे,
संतां कीन सहाय तैं, निज दुक्ख निवारे।
हुय सूअर हिरणक हणे, धरती उर चारे,
चंद रवी तारा चलैं, धूतैं थिर सारे।
हिरणाकुस रिण हाथळे, बेटौ बुचकारे,
जळ डूबत गजराज तैं, लीनौ ललकारे।
भसमाकर कीनौ भसम, हर रक्खणहारे,
बालसिली जळ डूबतां, प्रभु तोहि पुकारे।
साठ हजार स्रग हालिया, तैं कर निस्तारे,
मिनड़ीका नीवाहमें, निरदाघ निवारे।

हूं–मैं। जगपती–भगवान। तंतसार–मुख्य, थोड़ेमें, सारांशमें। खीण–क्षीण। सूअर–वाराह अवतार। हिरणक–हिरण्याक्ष राक्षस। हाथळे–पंजोंसे मारा। बेटौ–प्रहलाद। बुचकारे–प्यार किया (बचाया)। लीनौ–बचा लिया। भसमाकर–भस्मासुर राक्षस। बाळसिली–छोटे शरीरके बहुतसे ऋषि भाई थे, पढ़ाईमें इन्द्रको पराजित कर दिया था तब इन्द्रने उनको डुबोनेके वास्ते अति वृष्टि की परन्तु उन ऋषियोंको भगवानने अपने हाथ उनके ऊपर रख कर बचा लिया व इन्द्रका गर्व मिटाया। साठ हजार–सगर राजाके पुत्र जिनको भागीरथने गंगा लाकर स्वर्ग भेज गति कराई। स्रग–स्वर्ग। निरदाघ–बिना जले।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सींह् अगन फंद भीलसूं, सारंग छिटकारे,
अहल्या पाई उतम गत, जब पग रज धारे।
अजामेल वड अधनतैं, तैं उण विध तारे,
तैं दुरवासा तास तैं, अंबरीस उबारे।
गिरधारे लघु अंगुळी, ब्रज विघन निवारे,
पंडव नार पुकारतां, वड चीर वधारे।
लाखा जवहर लागतां, पंडपुत्र उबारे,
वळ राखे भारत्थमें, सुत पंखण प्यारे।
खपे अढ़ारह खोहणी, रख पंडव न्यारे,
मार जरासिंध भूकवे, ढीली भूपारे।
कीना ग्रेह सदांमका, सोव्रनके सारे,
संख रोड़कर सरगरौ, मखराज मंझारे।
जीवाड़ी जैदेवकी, म्रत नार मुरारे,
तीलोके घर भ्रत्त हुय, सब काज सुधारे।
देवळ केरे नांमदे, पंडत पछवारे,
काट जंजीर कबीरका, कर नार किनारे।
मैंगळ खोल्यौ मारवा, हुय वाघ हकारे,
बाळध द्वार कबीरके, तैं आंण उतारे।
कितनेई परगट किये, परचे तैं प्यारे,

छिटकारे–छुटकारा कराया (बचाया)। **तास**–त्रास। **वधारे**–वढ़ाया। **जवहर**–जौहर (जीवित जलना)। **वळ**–फिर, पक्ष। **भारत्थमें**–महाभारतके युद्धमें। **सुत पंखण**–पक्षीके बच्चोंको अर्थात् टींटोलीके बच्चोंको। **खोहणी**–अक्षोहिणी। **ढीली**–दिल्ली नगर (हस्तिनापुर)। **भूपारे**–राजा लोग। **ग्रेह**–घर। **सदांम**–सुदामा। **सोव्रन**–सुवर्ण, सोना। **रोड़कर**–बजवाया। **सरगरौ**–वाल्मीकि ऋषि। **मखराज**–अश्वमेध यज्ञ, युधिष्ठिरके अश्वमेध यज्ञमें वाल्मीकिके न आनेसे पंचांण शंख नहीं बजा तब श्रीकृष्णके कहने पर वाल्मीकि भक्तको बुलाया, भोजन कराया तो शंख बजा। **तीलोके**–शाहपुराके भक्त तिलोकचन्द वैश्यके। **भ्रत्त**–नौकर। **नांमदे**–नामदेव छींपा जातिका भक्त था। **मैंगळ**–हाथी। **वाघ**–सिंह (कबीर भक्तकी कथामें से)।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दे मोहरां रैदासकूं, तैं संकट टारे।
बीज विनांई बाजरी, निपजाय धनारे,
नाई कारण नृपतके, पग चांप पधारे।
सांम क्रपा कर सूरकी, आंख्यांज उघारे,
नरसीहाके हेतसूं, हूंडी सतकारे।
प्रभु तैं माधव ऊपरां, ढुळ कांबळ ढारे,
भळके खांडा भवनके, पत राखी प्यारे।
जैमल कारण मंड जुध, वड सेन विडारे,
गिनका कीर पढ़ावगी, वैकुंठ दवारे।
घाटमका घोड़ा पलट, किय ऊजळ कारे,

रैदास–रेईदास भक्त। सूर–सूरदास भक्त। उघारे–खोल दी, दृष्टि देदी। मारवाड़के गांव बलूंदेका दधवाड़िया शाखाका प्रसिद्ध चारण भक्त माधवदासजी जंगलमें एकान्तमें ईश्वर उपासना करते थे। वे बीमार हो गए, दस्तें लगीं, पास आदमी कोई नहीं था, वे अशक्त थे तो भगवानने स्वयं आकर उनके कपड़े बदले व अपनी कांवली ओढ़ाई। उन माधवदासजीके वंशज बलूंदेमें व गांव कूंपड़ासमें व वासणीमें विद्यमान हैं। ढारे–ओढ़ाई। भवन–भवानीसिंह चहुवांन महाराणाका उमराव जो लकड़ीकी तलवार म्यानमें रखता था। जैमल–मेड़तेके राठोड़ स्वामी जैमलजी जो चित्तौड़ पर बादशाह अकबरके हाथसे मारे गए थे, जैमलजीका रूप घर करके भगवानने मंडोरके राव मालदेवजीकी सेनाको मेड़ते पर पराजित किया था। कीर–तोता। घाटमका घोड़ा–घाटम नामक मीणा (एक जाति) जैपुर राज्यके गांव घोड़ीका निवासी था, चोरियें करता था। एक सन्तके उपदेशसे सत्य बोलता व भजन भी करता। गुरुने भेंटके वास्ते बुलाया, उसके पास कुछ नहीं था तो राजाका घोड़ा दिनके समय तबेलेमें से ले गया। द्वारपालने पूछा कौन है? घाटमने कहा—चोर हूं। इसको द्वारपाल हंसी समझा पर जब वास्तवमें पता लगा कि घोड़ा तो बगैर किसीके कहे चोर ले गया तो कोतवाल पीछे गया। आगे जंगलमें घाटम तो एक मन्दिरमें दर्शन करने गया था, कोतवालने घोड़ा पकड़ लिया, घाटम आया, भगवानने अपने भक्तकी रक्षाके वास्ते घोड़ेका रंग बदल दिया, श्याम रंग स्वेत कर दिया, कोतवालने पूछा, घाटमने सत्य कह दिया—राजाके पास उसको ले गए, उसने चोरीको व घोड़ेके रंग बदलनेका सब वृत्तान्त सत्य कह दिया और गुरु भेंटकी आवश्यकताको भी कह दिया, राजाने उसके दृढ़ सत्य पर व परमात्माकी कृपा कर प्रभावित होकर उसको छोड़ दिया, घोड़ा भी दे दिया, उसने गुरुके भेंट कर दिया। ऊजळ–सफेद घोड़ेका रंग जिसको नीला रंग कहते हैं। कारे–श्याम जिसको भ्रमर कहते हैं।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गुर दादू गजराजकूं, सांभर साधारे ।
पत तूं भूखौ पीतकौ, चित देख विचारे ,
भीलणका फळ भोगतां, नह झूठ निहारे ।
तंदुल खातां दुज तणा, सुध देह विसारे ,
कुरपतके मेवा कहर, चित नांही धारे ।
विलकुल खाधी विदुर घर, भाजी भलकारे ,
खाधी करमां खीचड़ीं, धाबळ सिर धारे ।
प्यालौ विषकौ पी लियौ, मीरां मनवारे ,
कितनेई परगट करूं, थिर हर गुण धारे ।
संहस मुखे निज सेस हू, जिह दोय हजारे ,
पढ़ पढ़ पार न पावही, अणथार उचारे ।
भगत वछळ तें भगतके, जुग जुग दुख टारे ,
व्रह्मदास यां वीनवै, हूं तौ बलिहारे ॥ १

****

साधारे–बचाया । फळ–बेरोंसे तात्पर्य है (शबरीके बेर) । दुजतणा–सुदामा द्विजके । भाजी–बथुवेका मामूली साग । भलकारे–शोभा करके, सराहना करके । जिह–जिव्हा, जीभ । वछळ–वत्सल ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

* श्री *

ब्रह्मदासजी कृत

भगतमाल

षष्ठम्

++++++++++

गीत नं० १

अदभुत गत रांम न लोपै आग्या,
इंद्र चंद्र मुख संकर आप।
भाव तणा लादांरो भूखौ,
बांदांरौ बांदौ मा बाप। १
कोट अनंत ब्रहमंडरौ करतां,
कोट अनंत दईतांचौ काळ।
बोलांरौ सांचौ निरवाहण,
गोलांरौ गोलौ गोपाळ। २
मोटा धणी अचंभौ मोटौ,
घट सूरा पण निपट धणोह।
ठावौ सकळ सकलरौ ठाकर,
तूं चाकर चाकरां तणौ। ३
दास ब्रह्म झूठी नह दाखै,
माधव कछू बुरौ मत मांन।
तीलोके घर रयौ भरतियौ,
छींपा तणी छवाई छांन। ४

लादां–कवे, निवाले। **बांदां**–गुलाम, चाकर, गोले। **मुख**–मुख्य। **बोलांरौ**–वचनोंका। **निरवाहण**–निभाने वाला। **भरतियौ**–सेवक (भृत्य)।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बाबा तूं पारथ रथ बैठौ,
दास थकौ मोटा दातार।
सेस महेस सूर सस सांमी,
पढ़ता विरद न पावै पार। ५

गीत नं० २

कहै मांनवी देव अणभेव चिरतां सकळ,
जांण कुण सकै गोपाळजीकौ।
ऊधरे संत महिमा करे ऊजळी,
निंद्या कर तिरे सिसपाळ नीकौ। १

भीड़ गाढ़ी पड़ी ररौ मुख भाखियौ,
लाह्नवर दाह सुण चक्र लीधौ।
त्याग पंखराव गज हेत कर तारियौ,
क्रोध कर ग्राहने पार कीधौ। २

दुवध दातार अणपार जगदीसरी,
भलांईं वेद गावै भलाई।
दूध पाय'र तिरी जसोदा देवकी,
पाय विख पूतना मोख पाई। ३

भाग जागै कहै किसी ही भांतसूं,
दमोदर मांय चित राख दीधां।
रुकमणी आदि तौ पतिव्रतसूं ऊधरी,
कूबड़ी आदि विभचार कीधां। ४

सबळ इचरज हुवै प्रभुरी वात सुण,

सांमी–हे स्वामी (भगवान)।

अणभेव–जिसका भेद कोई जान नहीं सकता, समझके बाहर। चिरतां–चरित्र (भगवानके)।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वडा अवतार जिण कीध वाधी ।
जांनकी दई जिण मुगत पाई जनक ,
ले गयौ खोस जिण मोख लाधी । ५
कहै ब्रह्मदास जगदीस महाराजरी ,
गत अगत सेस माहेस गावै ।
रिझावै जिके पदन्याव पावै परम ,
परमपद खिजावै जिकेई पावै । ६

गीत नं० ३

साधां हेत सदा परमेसर ,
केहा अदभुत काज करै ।
अवचळ राज बाळकौ आपै ,
खंभ फाड़ वाजियां खरै । १
बांधण हेत बंधावै बळवंत ,
विमळ भगत वस विसवावीस ।
वाहिण काढ़ पराक्रम वाळौ ,
दौड़ उठै पाळौ जगदीस । २
जगत विख्यात लंक गढ़ जैसौ ,
विन लीधां दे आप भणी ।

५—वाधी–अधिक । खोस–हर कर, छीन कर (रावण सीताको हर ले गया था)।

६—अगत–अगाध, जो नहीं जानी जा सकती ।

१—केहा–कितना, बहुत । बाळकौ–प्रहलादसे तात्पर्य है । वाजियां खरै–विकट स्थितिमें ।

२—बांधण हेत–राजा बलिको भगवानने वचनबद्ध करके पाताल भेजा परन्तु साथ ही स्वयं भी वचनबद्ध हो गए इसी वास्ते चार मास (वर्षा ऋतुमें) झोंपड़ी बना कर उस बलिके द्वार पर रहे (जिससे साधुओंमें चौमासा करनेकी रीति पड़ी) । वाहण–वाहन, सवारी (गरुड़) ।

३—विन लीधां–विजयसे पूर्व ही विभीषणको लंकेश कह दिया अर्थात् राज्य दे दिया ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आपहुतै मैं'मा जिण वाळी ,
घणनांमी दरसाय घणी । ३
पावक मांय करै प्रतिपाळौ ,
वांकौ अेक न होवै वाळ ।
सुतचौ नांम लियां निसतारै ,
कर पर गिरधारै किरपाळ । ४
पुसपांरी माळा पहरायां ,
जनम मरण मेटै विन जाप ।
विध विधरा भोजन विसरावै ,
बथवौ जाय खाय मा बाप । ५
छाडे नेम टापरा छावै ,
आंगण पोट उतारै आंण ।
नाज विना वायौ निपजावै ,
पमगां चढ़ जूटै पीठांण । ६

३—**घणनांमी**–अनेक नाम वाला, ईश्वर ।

४—**पावक मांय**–अग्निमेंसे बिल्लीके बच्चोंको बचाया । सिरियादेकी कथासे तात्पर्य है । **सुतचौ**–अजामिलने अपने पुत्र नारायणका अन्तकालमें नाम लिया,मोक्ष मिला । **कर पर**–गोवर्धन पर्वतको अंगुली पर धारण किया ।

५—**पुसपांरी माळा**–मेवाड़में चारभुजाके पुजारी देवाने भगवान की माला अपने गलेमें डाली, महाराणा आ गए तब वह माला उसने उतार कर उनको पहना दी, देवा वृद्ध था । डाढ़ीके सफेद बाल मालामें लग गए । महाराणा को भ्रम हुआ कि देवाने पहिन कर मुझको माला पहिनाई । दूसरे दिन जांच कराई गई तो क्या देखते हैं कि भगवानकी मूर्तिके सफेद डाढ़ी आई हुई है । इस पर देवासे क्षमा मांगी गई । देवा भक्त था । उसको मोक्ष मिली । **विधविधरा**–अनेक प्रकारके भोजन राजा दुर्योधनके छोड़ कर विदुरके घर जाकर श्रीकृष्णने सादा गरीबी भोजन बथवेके सागसे पाया । **विसरावै**–भूल कर, छोड़ कर ।

६—**छाडे**–छोड़ कर । **नेम**–नियम । **टापरा**–कच्चा मकान, नामदेव छीपेकी छांनसे तात्पर्य है । **आंगण पोट**–कबीरके घर पर नाजकी बाळद लेजा कर भिक्षुओंको बांटनेसे तात्पर्य है । **नाज विना**–बगैर बीज बोए नाज हुवा, धना जाट भक्तकी कथासे तात्पर्य है । **जूटै पीठांण**–युद्ध किया, मेड़तेके स्वामी राठौड़ जैमलजीका स्वरूप धारण करके भगवानने मंडोरके राव मालदेकी सेनासे युद्ध किया, गायें छुड़ाईं । विजय प्राप्त की, उससे तात्पर्य है । **वायौ**–बोया । **जूटे**–लगे । **पीठांण**–युद्ध ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

हाकण रथां सारथी होवै ,
भीड़ पड़्यां होयौ भाराथ ।
चोरां तणौ सीस दे चरवा ,
जिण घर धन पटकै जगनाथ । ७

सब नगरी करदे सोनारी ,
पुरस करै नारी पलटाय ।
धावळ ओट खीचड़ौ ढक लै ,
अपणा दे कपड़ा ओढ़ाय । ८

मैं'ता हेत करै माहेरौ ,
भगतां हूंडी आप भरै ।
सुंदर बैल वणौ सींगाळौ ,
काळौ तुरंग सपेत करै । ६

७—**हाकण रथां**—महाभारतमें अर्जुनका रथ कृष्णने हांका,उससे तात्पर्य है । **भीड़**—कण, संकट । **चोरांतणै**—कथा है कि एक धनी सेठ निर्धन हो गया था परन्तु ईश्वरका भक्त था, सत्य पर दृढ़ रहा । एक वार वह नगरके बाहर गया था । उसने एक धनका चरवा (तांवे या पीतलका बड़ा वर्तन) जमीनमें गढ़ा पाया, वहां निशान करके घर आया । रातको यह बात उसने अपनी स्त्रीको कही तो चार चोर वहां चोरी करने आए थे, वे सुन रहे थे । निदान वे उस स्थान पर पहुँचे, चरवा मिल गया, खोला तो अन्दर सर्प व बिच्छू भरे पाए, उन्होंने वंद कर दिया और जाना कि बनियेने बदमाशी की है सो उसीको सजा दी जावे । अतः वे वह चरवा उठा कर उस सेठके घर ले गए व सोते हुये पर ऊपरसे खाली करके भाग गये । सेठ जगा तो मोहरोंका ढेर पाया । तात्पर्य यह है कि जब भगवान प्रसन्न होते हैं तो बैठे बैठाए घर पर लाकर इस प्रकार सम्पत्ति दे देते हैं ।

८—**सब नगरी**—सुदामापुरीसे तात्पर्य है । **पुरस करै**—उज्जीनमें एक स्त्री भगवानकी मायासे पुरुष हो गयी थी । **धावळ**—करमां जाटनीकी कथासे तात्पर्य है । **अपणा**—माधवदास चारण भक्तकी कथासे तात्पर्य है ।

६—**मैं'ता**—नरसी मेहताके माहेरेसे तात्पर्य है । **भगतां हूंडी**—नरसी भक्तकी हुंडीसे तात्पर्य है । **सुन्दर बैल**—चौमुख (चौमा) चारण भक्तकी कथासे तात्पर्य है । **काळौ**—घाटम मीने भक्तकी कथासे तात्पर्य है ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नाई होय करै अंग मरदन,
चाकर होय निवारै चींत।
विरद निहार भाखसी बैठै,
मूरत छिब पलटै मात्रीत। १०
पूठें पई उठावै पोठां।
खोस तंदुळ भूठा फळ खाय।
दार खड़ग कर सार दिखावै,
जैं'र पियौ आणंद उपजाय। ११
दास ब्रह्म दूजा तज दीजै,
जो नुगते रीझे सब जांण।
लछवर तास वारण लीजै,
वडमतणा कीजै वाखांण। १२

गीत नं० ४

अडग राखियौ नेम गंगेवचौ ईसवर,
जठै पण दाखियौ आप जाबा।

१०–नाई होय–सेन भक्तकी कथासे तात्पर्य है। चाकर होय–तिलोकचंद वैश्य भक्तकी कथासे तात्पर्य है। विरद निहार–दादूजीके सांभरमें बिलंदखां द्वारा जेलमें देनेकी कथासे तात्पर्य है। मूरत–तुलसीदासजीकी कथासे तात्पर्य है, जब मुरलीधरजीकी मूर्ति धनुर्धारी रामचंद्रजीकी मूर्ति हो गई थी।

११–पूठं पई–नरसी भक्तकी बैलगाड़ीकी, माहेरे जाते जंगलमें, पहियेकी पूठियें खराब हो गई थीं तब भगवान किसना नामक सुथार वन कर वहां गए, पहिया पूठ कर ठीक कर दिया। उठावै पोठां–नरसी भक्तको भगवानने माहेरेका सामान अपनी पीठ पर एक भारी गांठ (पोठ) उठा कर पहुँचाया था, उससे तात्पर्य है। खोस तंदुळ–सुदामाके चावलोंसे तात्पर्य है। भूठा फळ खाय–शबरीके बेरोंकी कथासे तात्पर्य है। दार खड़ग–भवना (भवानीसिंह) चहुवान सरदार भक्तकी कथासे तात्पर्य है, जब लकड़ीकी तलवार फौलादकी हो गई थी। जैं'र पियां–मीरां भक्तके विष पीनेकी कथासे तात्पर्य है।

१२–नुगते–वड़े अवसर पर, विकट स्थितिमें, संकटमें। सब जांण–सर्वज्ञ। लछवर–लक्ष्मीवर, विष्णु। वडम–वड़प्पन। वाखांण–शोभा, स्तुति।

१—नेम–प्रण। गंगेव–भीष्म। चौ–का। जाबा–जवाब।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

धमळ खग धार पिंड काज धू-धारणा ,
बिरदरा वारणा लेऊं बाबा । १
रूप नरसींग पैळाद कज धारियौ ,
गयंद हद तारियौ वेद गावै ।
भगतरै काज नूप द्वार नाई भयौ ,
पार कुण भलाई तणौ पावै । २
खोस खाधा तंडळ बोर झट खावतां ,
भीलड़ी तणी नह झूठ भासी ।
जीमिया खीच करमां घिरे ज्वारका ,
वडम धिन द्वारका तणा वासी । ३
टेक छींपा तणी देख दुख टाळियौ ,
छांन बंध वाळियौ नकौ छांना ।
वरतिया रया मेटण चिंत्या वांणिया ,
केतला करूं वाखांण कांना । ४
कहै ब्रह्मदास जस जाप निसदिन करै ,
जोड़ कर सेस माहेस जेहा ।
बाप हौ बाप बळ बांधतां बंधावण ,
आप विन करै कुण कांम अेहा । ५

१—**धमळ खग**—पहिया । **पंड**—पांडव । **धू-धारण**—अटल धारणा-शक्ति वाला । **बाबा**—देव, भगवान । ३—**तंडळ**—तंदुल, चावल । **भासी**—देखी, कही । ४—**बधवाळियौ**—बंधाया । **वरतिया**—नोकर । **वांणिया**—तिलोकचंद वैश्यके पास । ५—**बळ बांधता बंधावण**—भगवानने बलिराजको वचनबद्ध करके पातालमें भेजा तब स्वयं भी वचन-बद्ध हो जानेसे झोंपड़ी मांड कर बलीके द्वार पर चार महीने (वर्षा ऋतु) तक रहे तभीसे साधुओंमें चौमासा करनेकी रीति है अर्थात् वर्षा ऋतुमें कहीं नहीं जाते, एक स्थान पर रहते हैं । **अेहा**—ऐसे ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गीत नं० ५

परमेसरतणी वडाई पेखौ,
जळसं बारे काढ़ जठै ।
मेट करम पैठायौ मैंगळ ,
तिण भेळौ खळ गयौ तठै । १
अैसौ देख अचंबौ आवै ,
पावै कवण भलाई पार ।
रयौ रिझावणहार लंकपुरी ,
हरिपुर गयौ खिजावणहार । २
कंस सिसपाळ पूतना काळी ,
भगवत दोखी सरब भयौ ।
पेमी ऊधव ली गत पाछै ,
गैबी मो'र सुथांन गयौ । ३
दास ब्रह्म भगतां ने दुसटां ,
दीजै सदा परम पद दांन ।
जगपत रीझ खीज दुहु जोड़ै ,
कसर नहीं थोड़ैरै कांन । ४

****

१—पैठायौ–पठाया (वैकुंठमें) । खळ–दुष्ट, ग्राह । २—अचूंबौ–आश्चर्य । रिझावणहार–प्रसन्न करने वाला, तात्पर्य विभीषण । खिझावणहार–नाराज करने वाला अर्थात् रावण । ३—काळी–काळी नाग । गैबी–गजब करने वाला अर्थात् अपराध करने वाला,अपराधी, विरोधी । मो'र–पहिले । सुथांन–मोक्षपद । ४—रीझ–प्रसन्नता । खीज–कोप । जोड़ै–बराबर ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

परिशिष्ट

नामानुक्रमणिका (पृष्ठ-संख्यासहित)

‡‡‡

अंबरीस (अम्बरीष) १९, ५२
अजामेळ (अजामिल) ३५, ५२
अनुकेत (एक संत) १०
अैल्या, अहल्या (अहिल्या) २६, ४०, ५२
इंद्र ५५
उत्तानपाद २८
कंस ६२
कपोत २८
कबीर ७, २२, ३६, ४१, ५२
करमा (एक भक्त जाटणी) ४३, ६१
किसन (कृष्ण) ४२
कीर (नाविक) ४०
कूबड़ी (कुब्जा) ५६
केसव (केशव) १, १६
गंगा २२
गंगेव (भीष्म) ६०
गंडकी (नदी) ३, ३४
गजराज ६, २५, ३४, ३९, ५१, ५४, ५६
गिनका (गणिका, वेश्या) ३५, ४७, ५३
गिरवर (गोवर्द्धन पर्वत) ३०, ४४
गोविंद ९
ग्राव ग्राह (मच्छ) ३, ३४, ३९, ५६
घाटम (सत्यवादी मीणा) ५३
चंदर (चंद्रमा) २६, ५५
चौमो (चौमुख भक्त) १२
जगदीस (जगदीश) ३९, ५६
जरासिंध ५२
जसोदा ५६
जांनकी ५७
जैदेव ५२
जैमल १४, ५३
टींटोळी २५
तिलोचन, तीलोके (तिलोकचंद, एक वैश्य भक्त) ११, ५२, ५५, ६१
दरिया (पिंजारा) ३०, ४९
दसकंध (रावण) २७
दसकंध-भ्राता (विभीषण) २७
दांणव (हिरणाकुश) १
दादू ६, २३, ३६, ४४, ४७, ५४
दुरजोधन (दुर्योधन) ५, २०
दुरवासा (दुर्वासा) १९, ५२
देवकी ५६
द्रोपां (द्रोपदी) ५, २०, ४३
दुःशासन ६, ४३
द्वारका १२, ४१, ६१
धना (धन्ना जाट) १०, ४८
धू (ध्रुव) २७, ३३, ३८
धोमर (भस्मासुर) १६
नरसला, नरसींग, नरसीहा, (नरसी मेहता) १२, ४१, ५३
नरसींग (नृसिंह) २, १८, ६१
नांमदे (नांमदेव, छीपा जाति का भक्त) १०, २३, ४२, ५२, ५५, ६१
नारद २८
नारायण (अजामिलका पुत्र) ३५
पंखराय, पंखराव (गरुड़) ३, ३९, ५६
पहळाद, पैळाद, प्रहळाद (प्रहलाद) १, १७, ३४, ३८, ६१
पुंडरपुर १०, ३५
पूतना ५६, ६२

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पेमदास (दरियाका गुरु ३१)
पेमल (मीरांका वास्तविक नाम) १३
बलवंत (बलीराजा) ५७
बाज २८
बाळकौ (ध्रुव) ५७
बिरज (व्रज) ४४
बृह्मदास ३१, ३७, ५०, ५७, ६०,
६१, ६२
भवन, भवना (भक्त भवानीसिंह या
भुवानीसिंह चौहान ८, ४६, ५१
भसमाकर (भस्माकर) ५१
भारत (महाभारत पुराण) ६
भील २६
भीलड़ी (शबरी) ४८, ५४, ६१
भीसम (भीष्म) ४५
मंड (मंडोर) १४, ५३
मग्गा (मगह नामकी भूमि) ३६
महेस (महेश) १०, ५६
मातङ्ग ऋषि ४
माधव (भगवान) ४
माधव (भक्त माधवदास) ५३
मालदेव (मंडोरके राव) १४
मीरां १३, २४, ४५, ४८ ५४
मैंगळ (हाथी) ५२, ६२
मैंता (नरसी मेहता) ५९
रघुनाथ ४०
रघुबीर ५, ४०
रांम (राम) १, ३, ११, ३३, ३४,
३५, ३६
रामचंद्र २९, ३४
रैदास ५३
लंक (लंका) २७, ३५, ४०
विदुर ५४
विभीखण (विभीक्षण) ४०
विलंदखान खोजा ७
व्याध २८
संकर ५५
सदांमा, छदांमा (सुदामा) ४२, ५२, ५४
सरगरौ (बाल्मीकि ऋषि) ५२
सस (शशि) ५६
सांभर ७, २३, ५४
सांवळ शाह (वैश्य, भगवानका रूप)
१३, ४१
साहपुरा ११
सिकन्दर लोदी २२
स्त्रियादे, सिरियादे (एक स्त्री भक्त)
९, १८, ३९
सिवरी (शबरी) ४, ५, ९, ४०
सिसपाळ (शिशुपाल) ५६, ६२
सुरपत (सुरपति, इंद्र) ४४
सुलता ५, ४८
सूर (सूरदास) ५३
सूर (सूर्य) ५६
सूवटा (सूआ) ३५, ४७
सेन (भक्त नाई) ३, ४६, ५३, ६०, ६१
सेस (शेषनाग) १०, ३१, ३२, ५६
५७, ६२
सैंभर (सांभर) ४४
सौव्रनपुरी (स्वर्णपुरी, सुदामापुरी) ४२
हरनाथ ३६
हरी ३, ६, ७, १२
हिरणक (हिरण्याक्ष) ५१
हिरणाकुस (हिरणाकुश) २, १७, ३४
३८, ५१

++++++++++

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust